जनाब गुरु नानक जी रह और इस्लाम

Compiler

मुफ्ती मुहम्मद फारूक़ साहब
जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ

Publisher:

मकतबा महमूदिया
जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ

जनाब गुरू नानक जी रह०

लेखक

मुहम्मद फारूक़ गुफिरा लहू

प्रकाशक

मकतबा महमूदिया

निकट जामिया महमूदिया, अलीपुर,
हापुड़ रोड, मेरठ – 245206 यू0 पी0

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

तफसीलात

नाम किताबः ..... जनाब गुरू नानक जी रह0 और इस्लाम

तरतीब : ..... मुहम्मद फारूक़ गुफिरालहू

कम्पोजिंग : ...... मुजीबुर्रहमान लखीमपुरी

सफहात : 98

संख्या : 2200

सन प्रकाशनः ..... 1431 हि0, 2010 ई

मूल्य : .....

मिलने का पताः-

मकतबा महमूदिया

निकट जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ

यू0 पी0 - 245206 (भारत)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

विषय सूची

जनाब गुरू नानक जी रह0 और इस्लाम

❑❑❑❑❑
❑❑❑

तम्मत व बिफ़जलिल्लाह व अम्मत

मकतबा महमूदिया

निकट जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड,

मेरठ यू0 पी0 - 245206 (भारत)

بسم الله الرحمن الرحيم
बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

عرض مرتب
अरज–ए–मुरत्तिब

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْم. اَمَّا بَعْد.
नहमदुहू वनुसल्लि अला रसूलिहिल करीम अम्मा बाअद

सिख भाइयों में बहुत सी इस्लाम की बातें पाई जाती हैं। उदाहरण

(1)......सिख भाई तौहीद के क़ायल हैं कि खालिक़ व मालिक सिर्फ एक है। वही इबादत (पूजने) के लायक़ है। मौत व ज़िंदगी, इज्जत व ज़िल्लत, नफा व नुक़सान सब उसी के कब्ज़े में है।

(2)......बुतों और मूर्तियों के क़ायल नहीं।

(3)......रसूलों के क़ायल हैं कि बन्दों की हिदायत के लिये अल्लाह तआला ने बहुत सी किताबें नाज़िल की हैं।

(4)......आसमानी किताबों के क़ायल हैं कि अल्लाह तआला

ने बन्दों की हिदायत के लिये बहुत सी किताबें नाज़िल की हैं।

(5)......नशे को हराम समझते हैं।

(6)......अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा निकालते हैं। और उसके अलावाह भी लोगों को खिलाने पिलाने का एहतमाम (इन्तिज़ाम) करते हैं। और इस को कारे खैर (पुन्य) सझते हैं।

(7)......उन का लिबास (कपड़े) भी मुसलमानों के लिबास (कपड़ों) के क़रीब है।

(8)......गुरुद्वारा क़िबला रुख बनाते हैं।

(9)......गुरुद्वारे की सफाई का बहुत एहतमाम (ख्याल) करते हैं।

(10)......मेहनत व जफाकशी के साथ सब काम करते हैं।

जाहिर है कि इन सब चीजों का सरचश्मां इस्लाम है। और ये सब चीज़ें इस्लाम ही की तालीमात हैं। इस लिये दिली तक़ाज़ा हुआ कि सिख भाइयों के मज़हबी पेशवा जनाब गुरूनानक साहब के हालात मालूम किये जायें। और उन से अन्दाज़ा लगाया जाये कि उन का सही मज़हब क्या था। इस लिये गुरूनानक साहब के मुताअल्लिक किताबों का मुतालआ किया। मोहतरम मौलाना हबीबुल्ला साहब (ज़ीद मज़दहुम) ने भी इस मौजूअ पर मुफस्सल किताब तसनीफ फरमाई है। और

सिख साहिबान की लिखी हुई किताबों के ह़वाले पेश किये हैं। इस किताबचा का अधिकतर हिस्सा इसी से निकला हुआ है। उन सब का खुलासा ये है कि गुरूनानक साहब:

(1)……हाफिज़े कुरआन थे। और रोज़ाना कुरआन पाक की तिलावत करते थे।

(2)……अज़ान देते थे। पाँचों नमाजें अदा करते थे।

(3)……ज़कात, रोज़े की ताकीद करते थे।

(4)……हज भी किया था।

(5)……एक साल मक्का मुकर्रमा में इमामत भी की थी।

(6)……तमाम इस्लामी मुलकों का सफर भी किया था।

(7)……बगदाद में लम्बे समय तक शाह मुराद की खिदमत में रहे। और उन के हाथ पर इस्लाम कुबूल किया था।

(8)……हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखिरी रसूल मानते थे। और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सच्चा इश्क़ रखते थे। कसरत से दुरूद शरीफ पढ़ते थे।

(9)……कुरआन पाक को आखिरी किताब मानते थे। और बाक़ी सब आसमानी किताबों को मन्सूख मानते थे।

(10)……क़यामत के दिन और हिसाब, किताब को मानते थे।

(11)......जन्नत, जहन्नम (स्वर्ग, नर्क) को मानते थे।

(12)......फरिशतो को मानते थे।

(13)......सहाबा-ए-किराम (रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन) को मानते थे। और उन से इन्तिहाई अक़ीदत (मुहब्बत) रखते थे।

(14)......उन के अक़ाएद मुसलमानों के अक़ायद के मुताबिक़ थे।

(15)......उन की इबादात मुसलमानों की इबादात के मुताबिक़ थीं।

(16)......इन ही चीजों में उखरवी नजात को मुनहसिर मानते थे।

इन सब चीजों से मालूम होता है कि "**गुरूनानक साहब**" न ये कि पक्के सच्चे मुसलमान थे। बल्कि मुसलमानों के मज़हबी पेशवा और बजुर्ग थे। बल्कि "**इस्लाम**" के दावत देने वाले और मुबल्लिग थे।

पेश-ए-नज़र किताबचा में इन चीजों को कुछ तफसील के साथ बयान किया है। और हर चीज़ का हवाला भी नक़ल कर दिया है। ताकि हमारे सिख भाई साहिबान इन सब चीज़ों को गौर से पढ़ें। और अपने बुजुर्गों की लिखी हुई किताबों से उन को मिला कर देखें। और फिर अपने बारे में फैसला करें कि गुरूनानक साहब के जो अक़ायद और जो आमाल थे, और

उन का जो मज़हब था। उस को इख्तियार किये बगैर न हम नजात पा सकते हैं। और न उन के सही मानने वाले और उनके भक्त हो सकते हैं। औन न उस के बगैर गुरूनानक जी की रूह खुश हो सकती है।

परवरदिगार आलम हक़ तआला शानहू हम सब को अपने पसन्दीदा और महबूब मज़हब को इख्तियार और कुबूल करने की तौफीक़ देकर आखिरत के दाईमी अज़ाब जहन्नम से बचाये। और जन्नतुल फिरदोस नसीब फरमाये। आमीन

ان ارید الا الاصلاح ما استطعت
وماتوفیقی الا باللہ علیه توکلت والیه انیب
صل اللہ تعالیٰ علی خیر خلقه سیدنا وحبیبنا
محمد وآله وصحبه وبارک وسلم.

आप का मुख्लिस और खैर अन्देश
मुहम्मद फारूक़ गुफिरालहू
जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ
यू0 पी0 – 245206 (भारत)
नज़ील मदरसा तालीमुद्दीन, इस्पंगवेच, दक्षिण अफ्रीका,

दिनाँक:

16 जमादिउल ऊला 1431 हि0 बरोज़ सनीचर

मराजेअ

इस विषय पर अनेक तफसीली किताबें

(1) दीन इस्लाम गुरू नानक जी की नज़र में।
लेखक : मौलाना इबादुल्ला गीलानी साहब रह0

(2) गुरू नानक जी साहब और उन की दावत व तबलीग।
लेखक : मौलाना हबीबुल्ला सा0 क़ासमी ज़ीद मजदहुम

(3) जन्म साखी भाई बाला साहब

(4) गुरू तीर्थ संग्रह।

(5) गुरू धाम संग्रह।

(6) गुरू धाम दीदार।

(7) तवारीख गुरू खालसा।

(8) पंथ प्रकाश निवास।

(9) गौवरमेन्ट लेकचर।

(10) सिखा दे राज दी देतिया।

(11) गुरू गाबिन्द सिंह जी।

(12) तवारीख सिखाँ।

(13) जीवन चरित्र श्री राम चंद्र जी।

(14) सिद्धांत बोधनी।

(15) गुरू नानक जोतते स्वरूप।

(16) नानक प्रकाश पत्रिका।

(17) गुरू नानक चमत्कार।

(18) गुरू नानक देव जी।

(19) गुरू ग्रंथ साहब रामकली।

(20) जीवन कथा गुरू नानक देव जी।

(21) गुरू ग्रंथ साहब।

(22) दार सारंग श्लोक।

(23) नानक प्रभोद।
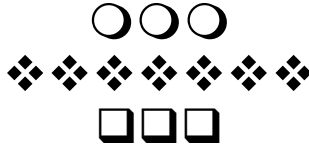
जन्म

आज से पाँच सौ साल पूर्व यानी सन 1469 ई0 में गुरूनानक जी एक हिन्दू घराने में जन्मे।

वालिद साहब

आप के बाप का नाम बाबा कल्याण सिंह था। मगर वह कालू के नाम से ज्यादा प्रसिद्ध (मशहूर) थे।

वालिदा साहिबा

उन की माँ का नाम त्रतपाजी था। कुछ का कहना है कि उन की माँ का नाम माता बीबी था।

जन्म स्थान

गुरूनानक जी किस स्थान पर जन्में? कुछ लोगों ने लिखा है कि राय भोवे की तलोंडी में जन्में। आज कल जिस को ननकाना साहब कहा जाता है। कुछ लोगों का ये भी कहना है कि गुरूनानक जी अपने ननिहाल में पैदा हुए थे। इसी लिये

उनका नाम नानक रखा गया था।

खुशखबरी

सिख विद्वानों और ज्ञानी लोगों ने ये भी लिखा है कि गुरूनानक के पिता को एक मुसलमान फकीर (साधू) ने ये खुशखबरी सुनाई थी कि तुम्हारे यहाँ एक पुत्र जन्मेगा वह बड़ा नेक और वली होगा।

सपना

रिसाला सन्त सिपाही अमृतसर में भी यही लिखा है कि गुरूनानक के जन्म से पहले राय ब्लार ने सपने में देखा था कि तलौंडी से एक नूरी (उज्जवल) दरया जारी होगा जो लोगों के दिलों की खेतियों को सैराब करेगा।

दायी

सरदार मोहन सिंह ने बयान फरमाया कि गुरूनानक जी के जन्म के समय सब से पहले जिस ने उनको अपनी गोद में उठाया वह मुसलमान दायी थीं। उन का नाम दौलता था। उन्हों ने गुरूनानक जी को नहलाकर (स्नान करा कर) कपड़ा पहनाया। बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़ कर गुरूनानक जी को शहद चटाया था।

मुसलमान बच्चों से मुलाक़ात

डा0 त्रलोचन सिंह जी कहते हैं कि जब गुरूनानक जी किसी मुसलमान बच्चे से मिलते थे। तो उस से **'अल्लाहु अकबर'** कहते।

तालीम व तरबियत

गुरूनानक जी का ज़माना वह ज़माना था कि जब हिन्दुस्तान पर मुसलमान बादशाहों की हुकूमत क़ायम हो चुकी थी। हुकूमत के लोग अधिकतर ईरान, ईराक़ वगैरह के इलाकों के थे। इस लिये उन की मादरी ज़बान (भाषा) फारसी थी। सरकारी दफतरों के कार्य यानी लिखत-पढ़त अधिकतर फारसी ज़बान में होती थी। इस लिये मुसलमान भी और हिन्दू भी और सिख भी फारसी ज़बान पढ़ते थे। जब हिन्दुस्तान पर अंग्रेज़ों की हुकूमत क़ायम होगयी, तो अंग्रेज़ों ने भी फारसी ज़बान को बाक़ी रखा। अतः फारसी ज़बान के साथ-साथ उर्दू ज़बान का भी फरोग़ और बढ़ावा होने लगा। फारसी ज़बान का लगाव अरबी ज़बान से बहुत ज्यादा है। इस लिये फारसी पढ़ने वाले कुछ अरबी ज़बान भी बोल लेते थे। और पढ़ते भी थे। उस वक्त हिन्दी भाषा (ज़बान) सीखने सिखाने का रिवाज (चलन) नहीं था। अल्बत्ता अंग्रेज़ों के वास्ते से अंग्रेजी ज़बान भी हिन्दुस्तान में परवरिश पाने लगी।

उस्ताज़ मोहतरम गुरू जी

गुरूनानक जी के पिता कल्याण चन्द्र सिंह जी की दिली ख्वाहिश (चाहत) और तमन्ना ये थी कि मेरे प्यारे बच्चे नानक की तालीम व तरबीयत वह शख्स (प्राणी) करे जो नेक और स्वालेह हो। और अरबी, फारसी और पंजाबी ज़बान से खूब वाक़िफ कार हो ताकि मेरे बच्चे नानक के दिल पर उन के अच्छे आमाल (कार्य) और अखलाक़ (चरित्र) का असर पड़े। और मेरे बच्चे के अखलाक़ भी अच्छे हों। और वह अच्छा आलिम और ज्ञानी भी बने।

सूफी सैय्यद हसन साहब कल्याण चन्द्र सिंह के पड़ोस में रहते थे। जहाँ पर सैय्यद हसन साहब एक आलिमे दीन थे। वहाँ पर वह एक शेख और पीर भी थे। वह बुजुर्ग और वली भी थे। साहिबे कश्फ व करामत में से भी थे।

कुरआन से इश्क़ और दीगर मामूलात

कल्याण चन्द्र सिंह ने अपने होनहार बच्चे नानक को उन के हवाले कर दिया। गुरूनानक जी ने उन से फारसी और अरबी और पंजाबी पढ़ी। गुरूनानक जी जिस तरह अपनी मादरी ज़बान पंजाबी में गुफतुगू (बातचीत) करते थे। इसी तरह

फारसी और अरबी में भी बात करते थे। उन के उस्ताज़ ने उन को कुरआन मजीद का आशिक़ (प्रेमी) भी बना दिया था। गुरूनानक जी जहाँ भी जाते थे। कुरआन शरीफ अपने पास रखते थे। और पाबन्दी के साथ बड़े जौक़ व शौक़ से कुरआन मजीद की तिलावत फरमाते थे। और हर रोज़ पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ते थे। और जब रमज़ान का महीना आता तो पूरे महीने के रोज़े रखते थे। और अल्लाह का ज़िक्र करते थे। और आखिरी नबी और रसूल (संदेश्ठा) मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अधिक से अधिक दुरूद व सलाम भेजते थे।

मज़हब-ए-इस्लाम की तालीम

गुरूनानक जी ने अपनी मादरी ज़बान पंजाबी भी मोलवी सैय्यद हसन साहब से पढ़ी थी। और इस्लाम के सिद्धांत बुन्यादी किताबों का इल्म (ज्ञान) भी इन्हीं से सीखा था। इसी तरह मज़हब-ए-इस्लाम के अहकाम और मसाईल भी गुरूनानक जी ने अपने उस्ताज़े मोहतरम मोलवी सूफी सैय्यद हसन साहब से सीखा था।

इल्मी और शायराना ज़ौक़

गुरूनानक जी पंजाबी ज़बान (भाषा) में आला क़िस्म के अशआर (शायरी) कहते और पढ़ते थे। इसी तरह फारसी

और अरबी में भी आला क़िस्म के कहने की मुकम्मल सलाहियत रखते थे। जब इन्होंने फारस का सफर किया तो उन के फारसी कलाम को सुन कर अहले अदब ने बड़ा एज़ाज़ और एकराम किया। और उनके इल्म को देखकर अहले इल्म ने एहतराम किया। और जब अरब ममालिक में गये तो वहाँ के उलमा और अवाम ने उनकी अरबी ज़बान और उनके अरबी अशआर को सुन कर उन को एक बड़ा अदीब और आलिम समझा।

डा0 त्रलोचन सिंह ने अपनी किताब ''जीवन चरित्र गुरूनानक देव'' में गुरूनानक जी के अरबी अशआर और उन के अरबी कलाम को लिखा है। उन्हों ने बगदाद से उन के अरबी अशआर की फोटो कॉपी करा कर मंगाया है। वह अशआर अब भी उन मुस्लिम इलाकों की लाईब्रेरियों और कुतुबखानों (पुस्तक गृह) में मौजूद हैं।

अशआर

कुछ अशआर उदाहरण के तौर पर आप की सेवा में उपस्थित हैं।

تَـوَدِّيْـتُ فِـىْ كُـلِّ الْبِلاَدِ فَـقِيْـرًا
وَسَـرَيْـتُ فِـىْ اَقْـصَـى الْبِلاَدِ كَثِيْـراً

وَاَتَيْتُ بُغْدَادَ الشَّرِيْفَةَ كَىْ اَرَىٰ

بَهْلُوْلَ دَانَا اِذْ اِلَيْهِ اُشِيْرًا

نَانَكَ اَتَاكَ الْيَوْمَ فِيْكَ مُشَوَّقٌ

يَرْجُوْا الْمَسَامِعَ مِنْكَ وَالتَّقْصِيْرًا

तवद्दीयतु फी कुल्लिल बिलादि फकीरन।
व सरैयतु फी अक़्सल बिलादि कसीरन।।
व वतैयतु बुगदादश शरीफता कय अरा।
बहलूला दाना इज़् इलैयहि उशीरन।।
नानका अताकल यौमा फीका मुशौव्वकुन।
यरजुल मसामिआ मिन्का वत्तक़्सीरन।।

अर्थ : मैं एक दुरवेश (मंगता) के तौर पर जहाँ भी गया। लोगों ने मुझसे मुहब्बत की। और मैं ने दूर व दराज़ ममालिक में बहुत सफर किये। मैं बगदाद शरीफ आया, ताकि बहलूल दाना की ज़ियारत कर सकूँ। जब कि एक गैयबी आवाज़ ने मुझको इस का इशारा किया। कि ऐ बहलूल दाना! आज नानक तेरी मुहब्बत में मस्त होकर खिदमत में हाज़िर हुआ है। वह तुझसे अपनी कोताहियों की मआफी (क्षमा) का तलबगार है।

डा0 त्रलोचन सिंह जी ने गुरूनानक जी के इन अशआर के साथ उन का अरबी में इरशाद भी नक़ल किया है। वह निम्नलिखत है।

حِيْـنَـمَـا دَخَـلْـتُ مَـرْقَـدَ الشَّيْـخِ بَهْـلُوْلَ دَانَا عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ الْـعَبَـاسِـيِّ وَاَقَـمْتُ فِيْ التَّكِيَّةِ الْعَبَّاسِيَّةِ الْوَاقِعَةِ فِيْ مَحَلَّةِ الْخَيْزَرَانَ بَـعْـدَ اِيَـابِـيِّ مِنْ مَّكَّةِ الْمُكَرَّمَةِ وَذٰلِكَ فِيْ شَهْرِ رَبِيْعِ الْاَوَّلِ ٩١٧ هِجْرِيَّةً وَاَقَمْتُ بِهَا اِلٰى رَجَبِ الْمُرَجَّبِ الْمُبَارَكِ ثُمَّ سَافَرْتُ مِنْهَا وَمَعِيَ الصِّدِّيْقُ الْحَمِيْمُ رُكْنُ دِيْنِ اِلٰى جِهَةِ هِنْدُوسْتَانَ.

ही नमा दखलतु मरक़दश शैखि बहलूला दाना अलैहिर रहमतुल अब्बासीय्यी व अकमतु फित्तकीय्यतिल अब्बासीय्यतिल वाकिअति फी महल्लतिल खैज़राना बअदा इयाबीय्यी मिम मक्कतिल मुकर्रमति व ज़ालिका फी शहरि रबीय्इल अव्वलि 917 हिजरीय्तन व अक़मतु बिहा इला रजबिल मुरज्जबिल मुबारकि सुम्मा साफरतु मिन्हा व मइयस सिद्दीकुल हमीमु रुकनु दीनि इला जि हति हिन्दुस्ताना।

अर्थ : ये अशआर मैं ने उस समय कहे। जब कि मैं शेख बहलूल अलैहिर्रहमह अब्बासिया के मज़ार पर आया। और तकिया अब्बासिया में जो मोहल्ला खैज़रान में वाकेय है। वहाँ पर मैं ने मक्का मुकर्रमा से वापसी पर क़याम (पड़ाव) किया। और मेरी ये वापसी रबीउल अव्वल सन 917 हि0 में हुई थी। और वहाँ पर रजबुल मुरज्जब तक मुक़ीम (ठहरा) रहा। फिर मैं ने अपने जिगरी दोस्त और साथी रुकनुद्दीन के साथ हिन्दुस्तान का सफर इख्तियार किया।

दूसरा अरबी कलाम

दस साल तक अरब ममालिक का सफर कर के और मुसलमान बुजुरगों से मिल कर उन के अखलाक़ से मुताअस्सिर होकर जब हिन्दुस्तान वापस आये, तो उस वक्त उन पर एक कैफियत तारी हुई। उस वक्त ये अशआर कहे हैं। डा0 त्रलोचन सिंह जी ने अपनी किताब ''जीवन चरित्र गुरूनानक देव जी'' के पेज 304 पर लिखा है।

لِلّٰهِ قَوُمٌ فِی السِّیَاحَةِ فُتِنَّا
کَالُوَرُدِ اِلَّا اَنَّهٗ لاَ تُجُتَنٰی
وَطَغَاةُ هِنُدُوسُتَانِ یَدُعُوُنِیُ لَهُمُ
شُکُرًا اِلٰهَ الُعَرُشِ اِنِّی مُؤْمِنًا
وَمُکَوِّنُ الُاَکُوَانِ اَنُقَذَ نَانَکَ
مِنُ حِزُبِ الشَّیُطَانِ طَهَّرَ قَلُبَنَا
اِذُ یَجُعَلُوُنَ مَعَ الُاِلٰهِ مُشَارِکًا
حَاشَا شَرِیُکَ اَنُ یَّکُوُنَ لِرَبِّنَا

लिल्लाहि कौमुन फिस्सियाहति फुतिन्ना।
कलवरदि इल्ला अन्नहू ला तुजतना।।
व तुगातु हिन्दुस्तानि यदऊनी लहुम।
शुकरन इलाहल अर्शि इन्नी मुअमिनन।।

व मुकव्विनुल अकवानि अनकज़ा नानका।
मिन हिज़्बिस्शैतानि तह्हरा कल्बना।।
इज़् यजअलूना मअल इलाहि मुशारिका।
हाशा शरीका अंय यकूना लिरब्बिना।।

अर्थ : (1) इस अल्लाह वाली क़ौम का क्या कहना कि जिन को सैर व सियाहत की वजह से आज़्माईश में डाल दिया गया है। उन की मिसाल गुलाब के फूलों की तरह है। लेकिन वह ऐसे फूल हैं कि जिन को तोड़ा नहीं जा सकता है।

(2) हिन्दुस्तान के सरकश लोग मुझे बुला रहे हैं। अर्श वाले खुदा का शुक्र है कि मैं मोमिन हूँ। इस लिये उन की तरफ माईल नहीं हूँगा।

(3) कायनात (संसार) का मालिक वह परवरदिगार है। जिस ने नानक को शैतान के गिरोह से नजात दी है। उस ने हमारे दिल को पाक व साफ कर दिया है।

(4) वह लोग मुशरिक हैं। बुतों को खुदा का शरीक बतलाते हैं। मगर ऐसा हरगिज नहीं हो सकता, क्योंकि हमारे परवरदिगार का कोई शरीक नहीं है। यानी वह अकेला है।

तीसरा अरबी कलाम

जब गुरूनानक बगदाद से हिन्दुस्तान वापस आने लगे तो

बगदाद को दारुस्सलाम कहते हुए उस से खिताब किया। और उस की जुदाई पर अफसोस जाहिर किया। और बहलूल दाना के मज़ार की जुदाई पर भी अपने मलाल व गम को जाहिर फरमा रहे हैं।

اَوَّاهِ بَغْدَادُ يَا دَارَ السَّلَامِ لِمَا
اَبْعَدْتَّ عَنِّى كَمِرْاٰةٍ عَلٰى نَظَرِىْ
اِذْ ذَكَرْتُكَ بُهْلُوْلَ هِىَ سَفَحَتْ
لَوَاحِظِىْ وَفُوَادِىْ صَارَ فِىْ خَطَرِىْ
لَوْ كَانَ وَصْلُكَ بِهِنْدُوسْتَانِ اَجْمَعُهَا
هَانَتْ عَلَىَّ وَمَنْ لِلْعَمِىَ كَالْبَصَرِىْ
دَعِ الرِّوَايَاتِ وَالْاَخْبَارَ قَاطِبَةً
فَاِنَّ لَيْسَ عَيَانُ الشَّىْءِ كَالْخَبَرِىْ

अव्वाहि बगदादु या दारस्सलामि लिमा।
अबअदता अन्नी कमिरआतिन अला नजरी।।
इज़ ज़करतुका बहलूला हिया सफहत।
लवाहिज़ी व फुवादी सारा फी खातारी।।
लौ काना वसलुका बिहिन्दुस्ताना अजमउहा।
हानत अलैय्या व मन लिल अमिया कलबसरी।।
दइर रिवायाति वल अखबारा कातिबतन।
फइन्ना लैय्सा अयानुश शैय्आ कलखबरी।।

अर्थ : (1) हाय बगदाद ऐ दारुस्सलाम! तू मेरे लिये एक आईने के मानिन्द (जैसा) है। तू मुझ से क्यों दूर हो गया।

(2) ऐ मेरे प्यारे बहलूल! जब तू मुझे याद आता है। तो मेरी आँखें आँसू बहाना शुरू कर देती हैं। और मेरा दिल खतरे में घिर जाता है।

(3) ऐ बहलूल! काश कि तुम्हारी मुलाकात हिन्दुस्तान में किसी जगहा (स्थान) पर हो जाती, तो मुझ पर जुदाई (बिछड़ने) की घड़ियाँ आसान हो जातीं। और कौन है जो आँखों से बढ़ कर अन्धे के लिये मुफीद हो सकता है।

(4) ऐ नानक! इन तमाम किस्सों और कहानियों (कथाओं) को छोड़ दे। क्यों कि सुनी सुनाई बात खबर किसी शख्स के लिये भी आँखों देखी चीज़ के बराबर नहीं हो सकती।

गुरू नानक का सफर

गुरूनानक जी ने दस साल तक इस्लामी मुलकों का सफर किया है। जिस में मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा, ईरान व ईराक़ और बगदाद वगैरह शामिल हैं। आप के उस्ताज़ मौलाना सैय्यद हसन (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने आप को सफर

करने का मश्विरा (राय) दिया था। जिस की वजह से आप ने खुद ही अपने उस्ताज़-ए-मोहतरम से अपने सफर का इरादा जाहिर किया था। आप के उस्ताज़ ने ही मश्विरा दिया था कि बेटे नानक अब तुम पढ़ कर आलिम हो चुके हो। जिस धर्म और मज़हब की तुम को तालीम (शिक्षा) दी गयी है, अब उस धर्म के मानने वालों के पास जाओ और उस का अमली नमूना देखो। उन जगहों की ज़ियारत करो। और वहाँ के बुजुरगों से मुलाकातें करो। गुरूनानक जी ने जब इस्लामी मुल्कों का सफर शुरू किया तो उन्होंने मरवाना को अपने सफर का साथी बनाया। मगर गुरूनानक जी ने अपने अरबी अशआर में अपने सच्चे दोस्त और साथी रुकनुद्दीन के नाम से खिताब फरमाया है। मुमकिन है कि मरवाना का असल नाम रुकनुद्दीन हो। और मरवाना उन का उरफी नाम रहा हो।

सफर में
अज़ान और नमाज़ का एहतमाम

जब गुरूनानक जी ने सफर शुरू किया तो हाजी पीरों वाले नीले कपड़े पहने, और हाथ में एक असा (सोंटा) लिया। और बगल में कुरआन शरीफ लिया, और हर जगह वजू और नमाज़ का एहतमाम फरमाते थे। गुरूनानक जी अपनी अज़ान और असरात को खुद बतला रहे हैं।

बाबा फेर मके गया नील बिस्तरहाय बनवारी।
असा हथ किताब कोज़ह बांग मुसल्ला धारी।।

अर्थ : जब गुरूनानक जी ने मक्का शरीफ जाने के लिये सफर शुरू फरमाया तो नीले रंग के कपड़े पहने थे। और आप अपने हाथ में सोंटा और बगल में कुरआन शरीफ और नमाज़ पढ़ने के लिये मुसल्ला और वजू करने के लिये एक लोटा अपने साथ लिये हुए थे। और अज़ान कहते हुए मक्का पहुँचे थे। (**हवाला**:- दारा भाई गुरूदासदार यकुम पोड़ी पेज:132)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

बाब गया बगदाद नूँ बाहर जाने किया स्थाना।
इक बाबा अकाँ रूप दूसरा रब्बानी मरवाना।।
दती बांग नमाज़ कर सुन समान भया जहाना।

अर्थ : जब बाबा नानक बगदाद गया तो उस के साथ दूसरा साथी और दोस्त मरवाना भी था। बाबा ने नमाज़ के लिये वजू किया, और अज़ान दी। सुबह ही सुबह मेरी अज़ान बगदाद की गलयों से टकरा गयी। और दूर-दूर तक फैल गयी।

(**हवाला**:- दारा भाई गुरूदासदार यकुम पोड़ी पेज:25)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

कन उंगलियाँ पाए तब दती बांग।
जितनी उम्मत जमा सी सुन हुई सुन कर चांग।।

अर्थ : नानक ने कानों में उंगलियाँ डाल कर ऐसे अन्दाज़ से अज़ान दी कि जितने लोग वहाँ पर मौजूद थे या जिन लोगों ने मेरी अज़ान सुनी उन पर एक किस्म (तरह) की कैफियत तारी हो गयी।

(**हवाला**:- जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:203)

गुरू नानक जी की इमामत

जब गुरूनानक जी मक्का शरीफ पहुँचे। तो खुदा के घर बैतुल्लाह शरीफ की ज़ियारत कर के उस के तवाफ किये। तजल्लियात रब्बानी को देख कर फरेफता और आशिक हो गये। मक्का शरीफ के कुछ लोग गुरूनानक की मुहब्बत और इताअत की कैफियत को देख कर समझ गये कि ये कोई वली हैं। जो बाहर से आये हुए हैं। उन को हम अपने मोहल्ले में ले चलें और उन की खिदमत करें।

गुरूनानक जी बहतरीन अरबी ज़बान जानते थे। और बहतरीन कुरआन शरीफ भी पढ़ते थे। इस मोहल्ले के लोगों ने गुरूनानक को अपना इमाम बना लिया। गुरूनानक जी इमामत भी करते थे। और बैतुल्लाह शरीफ की ज़ियारत और उस का तवाफ भी करते थे। और कुछ औकात (समय) मुकर्रर कर के मस्जिद-ए-हराम में नमाज़ भी पढ़ते थे। और अल्लाह तआला का ज़िक्र भी करते थे। इस तरह से एक साल तक मक्का मुकर्रमा में ठहरे रहे, और इमामत भी करते रहे।

अल्लाह तआला की ज़ियारत

सोढी महरबान जी जो गुरू राम दास जी के बड़े पोते थे। वह बयान करते हैं कि गुरूनानक जी को मक्का मुअज़्ज़मा के क़याम के दौरान अल्लाह तआला की ज़ियारत नसीब हुई थी। गुरूग्रंथ साहब में गुरूनानक जी का ये इरशाद भी दरज है।

सपने आया भी गया मैं जल भर या रोय।
आये न सकाँ तुझ कुन प्यारे भेज न सकाँ कोय।।
आओ स्वभगी नींद ड़िये मत शह देखाँ सोय।।।

अर्थ : (1) मुझे एक मरतबा ख्वाब में दीदार नसीब हुआ। जब मैं जागा तो मेरी आँखों से आँसू रवाँ थे।

(2) मेरा खुदा ऐसे मुक़ाम पर है कि मैं इस माद्दी जिस्म के साथ नहीं पहुँच सकता। और न ही किसी क़ासिद को भेजवा सकता हूँ।

(3) ऐ खुशक़िस्मत नींद तू ही आजा शायद तू ही दीदार इलाही का ज़रीआ बन जा।

(**हवाला**:- सोडी महरबान पेज:843, गुरू ग्रंथ मोहल्ला पेज:558)

बगदाद के एक पीर से मुरीद होना

जब गुरूनानक जी सारी कायनात के मालिक अल्लाह

के घर बैतुल्लाह की खूब ज़ियारत कर चुके और हज़रत सरकार-ए-दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के रौज़े मुबारक की ज़ियारत से फारिग हो गये तो एक पीर और गुरू की तलाश में बगदाद की तरफ चले। उन के खदिम और मुखलिस दोस्त रुकनुद्दीन उनके साथ थे कि अब मुझे किसी शेख और पीर से मुरीद होकर उन के पास रहना चाहिए। ताकि मेरे ज़ाहिर और बातिन की इसलाह हो जाये। 'शेख मुराद' (रहमतुल्लाहि अलैहि) उस वक्त बगदाद के बड़े पीर और वलियों में गिने जाते थे। गुरूनानक जी उन की खिदमत में हाजिर होकर उन से मुरीद हो गये। गुरूनानक को शेख मुराद (रहमतुल्लाहि अलैहि) के मिल जाने से, उन की दिली तमन्ना और मुराद पूरी होगयी।

शेख मुराद (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने गुरूनानक की सलाहियत को देख कर अपनी निसबत और रूहानियत के असरात को गुरूनानक जी के क़ल्ब पर डाल दिया। गुरूनानक वली और बुजुर्ग बन गये। जब शेख मुराद का इन्तिक़ाल हो गया। तो गुरूनानक जी ने अपने शेख मुराद (रहमतुल्लाहि अलैहि) की यादगार में एक मस्जिद बनवाई, और एक मदरसा बनवाया। गुरूनानक जी की बनवाई हुई मस्जिद और मदरसा अरबी अब भी बगदाद में मौजूद है।

(**हवाला**:- दीन इस्लाम पेज:39)

खुश क़िस्मती से आज भी बगदाद में वह कतबा मौजूद है जिस से आसानी से गुरूनानक के मुर्शिद यानी पीर की निशानदही (पहचान) होती है। मिस्टर इन्द्रभोशन बनरजी ने इस कतबे का तर्जुमा (अर्थ) इस तरह किया है।

अर्थ : गुरू ''मुराद'' वफात पागये। बाबा नानक फकीर ने इस इमारत की तामीर में हाथ बटाया जो एक नेक मुरीद की तरफ इज़हार-ए-अक़ीदत के तौर पर था।

हिन्दुस्तान वापसी

गुरूनानक जी बगदाद के अपने दोस्तों, दुर्वेशों और अपने पीर 'मुराद' (रहमतुल्लाहि अलैहि) के मुरीदों से मिल कर वहाँ से हिन्दुस्तान के लिये चले। रास्ते में जितने इलाक़े सामने आये। वहाँ दुर्वेशों और अपने दोस्तों से मिलते हुए हिन्दुस्तान तशरीफ लाये। हिन्दुस्तान आने के बाद आप ने दरया -ए-रावी के किनारे एक बस्ती किरतपुर के नाम से बसाई। और किरतपुर में अपना मकान भी बनाया। उन के पास हिन्दू भी आते थे, और मुसलमान भी आते थे। हिन्दू कहते थे कि नानक बाबा बहुत बड़े गरू हैं। और मुसलमान कहते थे कि नानक साहब एक बहुत बड़े वली और बुजुर्ग हैं। क्यों कि ये वही काम करते थे जो औलिया अल्लाह करते हैं। वह नमाज़ भी पढ़ते हैं। और रोज़ा भी रखते हैं। और लोगों को कलमा

–ए–इस्लाम की दावत देते हैं। और बुत व मूरत और देवी देवताओं की पूजा पाट से लोगों को रोकते हैं।

सफर हज

☞ **गुरूनानक जी ने बैतुल्लाह और मक्का मुअज्जमा के बारे में ये भी फरमाया है।**

''इहा मकान वडियां बुजुरगाँ दाहे''

अर्थ : यानी ये मकान बुजुरगों और अल्लाह वालों का है। यहाँ पर रहने वाले सारे इन्सान अल्लाह के आशिक और बुजुर्ग हैं।

''जन्म साखी'' में लिखा हुआ है कि गुरू जी ने खुदा के हुक्म की तामील (पूरा करने) में खुद भी हज करने की गरज से मक्का मुअज्जमा का सफर इख्तियार किया था। इस सफर हज में भी मरवाना आप के साथ थे। जब इस सफर पर जाने का इरादा किया तो फरमाया कि ''मरवाना चल एस भी दीदार हज मके का कराँ हा।

गुरूनानक जी ने मक्का मुअज्जमा के बारे में ये भी फरमाया कि मक्के की हक़ीक़त को खुदा तआला ही जानता है। या कुछ चार किताबों में पाई जाती है।

☞ भाई गुरूदास ने लिखा है कि गुरूनानक जी ने एक मुसलमान के लिबास में मक्का मुअज्जमा का हज

किया था।

☞ भाई मुन्नी सिंह ने लिखा है कि गुरूनानक ने इस सफर में कुरआन शरीफ की आयात वाला मुक़द्दस चोगा भी पहना था।

☞ जन्म साखी भाई बाला में लिखा है कि गुरूनानक जी ने मक्का मुकर्रमा के क़रीब एहराम भी बांधा था। जिसे जन्म साखियों में हाजियों वाला बाना बयान किया गया है।

☞ उन में ये भी लिखा हुआ है कि गुरूनानक जी ने मक्का के निकट पहुँच कर हाजियों की सूरत बनाई। नीले कपड़े पहने। एक हाथ में तसबीह ली, और सर पर मुसल्ला उठाया, और बगल में कुरआन शरीफ दबाया। गुरूनानक एक फकीर हाजी की सूरत में मस्जिद में जा बैठे। और कुरआन शरीफ की सूरतैं पढ़ने लगे। और हम्द-ए-इलाही गाने लगे।

गुरूनानक जी ने बाज़ हाजियों को लग्व बातों में यानी उन को हंसी मज़ाक़ और ठट्ठेबाज़ी की हरकतों में मशगूल देखकर मरवाना से फरमाया ए मरवाना! हाजियों को जाने दो। अगर हमारे नसीब में हज है तो हम भी जा पहुँचेंगे। इस रास्ते में अगर महर व मोहब्बत से हम लागों की खिदमत करते जाएं तो हम भी फैज़ पा सकते हैं। और अगर हंसी व मज़ाक़ और

रंज व गम पहुंचाने वाली बातें करते जाएं तो हाजी नहीं बन सकते हैं।

☞ एक सिख विद्वान सरदार मन्जीत सिंह जी बी. ए., एल. एल. बी. एडीटर रिसाला सन्त सिपाही अमृतसर ने लिखा है कि गुरूनानक जी ने पूरे अदब व एहतराम के साथ मक्का मुअज्जमा का हज किया है। हज का सफर करने के वक्त आपने हज वाला तरीक़ा इख्तियार किया था। सिख किताबों से ये भी मालूम होता है कि गुरूनानक को उनकी ज़िन्दगी में हाजी नानक कहते थे। और जब उनका इन्तिक़ाल होगया तब भी उनको हाजी नानक के नाम से याद करते थे।

गुरू नानक जी का चोला

गुरूनानक जी का कुरआन शरीफ गुरूहरसहाय जिला फिरोज़पुर में रखा हुआ था। इसी तरह गुरूनानक जी का चोला जिस पर कुरआन मजीद की आयात लिखी हुई थीं। आपके आशिक़े-ए-कुरआन होने पर ज़बरदस्त दलील है। ये चोला आज कल भी डेरा बाबा नानक की जिला गोवरदासपुर में गुरूनानक की औलाद बेदियों के पास है। इस चोले का खाका चौधरी करतार सिंह हेडमास्टर ने सन 1935 ई0 में अपनी

तसनीफ जुगराफिया जिला गुरूदासपुर में नक़ल किया था। और पाकिस्तान बनने से पहले इस जुगराफिया को जिला गुरूदासपुर के प्राईमरी स्कूलों में रीडर के तौर पर पढ़ाया जाता था। उस का प्रकाशन लाला मलख राज विगल कुतुब फरोश बटाला ने गौरन्मेंट ऑफ इंडिया से रजिस्टरी करवा कर की थी।

यही वह गुरूनानक जी का चोला है कि जब इस को वह पहनते थे। तो उन पर वज्दानी कैफियत पैदा हो जाती थी। खुदा का आशिक और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का शैदाई वज्द में मस्त हो कर झूम जाया करता था। इस की अशाअत लाला मलख राज विगल कुतुब फरोश बटाला ने गौरन्मेंट ऑफ इंडिया से रजिस्टरी करवा कर की थी। इस में इस का खाका यूँ दरज है।

बाज़ सिख अखबारों ने गुरू जी की ऐसी तसावीर भी शायअ की हैं जिन में गुरू जी को ये चोला पहने दिखाया गया है। (**हवाला:** सच्चा ढिंढोरा अमृतसर नानक नं0 1926 ई0, अजीत जालन्धर गुरूनानक नं0 1969 ई0)

और ये नोट भी दिया गया है।

''कुरआन दियाँ आयताँ अन्कित चोला पाटी''

(**हवाला:** अजीत जालन्धर गुरूनानक नं0 1969 ई0)

दावत-ए-तौहीद

तौहीद के बारे में गुरूनानक जी ने तफसीली गुफतगू

की है। हम गुरू जी के कलाम से चन्द उदाहरण दिये देते हैं।

गुरूजी ने अपने कलाम में खुदा तआला का इस्म-ए-ज़ात बयान किया है। वह फरमाते हैं। ''नांव खुदाई 'अल्लाह' भया आव पूरख को 'अल्लाह' कहिये शेखा आई वारी।''

अर्थ : खुदा तआला का इस्म-ए-ज़ात 'अल्लाह' मशहूर है। अब मुसलमानों का ज़माना शुरू होगया है। अब खुदा को अल्लाह कहा जाता है। (**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब दारा आसामी मोहल्ला सोम पेज:470, गुरू ग्रंथ साहब श्री बसंत मोहल्ला पेज:141)

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''नानक नांव भया रहमान।'' (**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब राम कली मोहल्ला पेज:900)

''सब वनी आवनी मक़ाम एक रहीम'' (**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब श्री राग मोहल्ला पेज:64)

अर्थ : गुरूनानक जी फरमा रहे हैं कि वह 'अल्लाह' जो अकेला है। वह रहमान भी है। रहीम भी है। अपने गुनहगार बन्दों पर रहम करता है।

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''साहब मेरा एको है एको है भाई एको है।'' [मेरा खुदा वाहिद है। ए भाई! वह एक ही है।] (**हवालाः** श्री गुरू ग्रंथ साहब मोहल्ला पेज:350)

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''बे मोहताज बे अन्त अपारा। [वह बे मोहताज और बे अन्त है।'' (हमेशा के लिये

है) कोई शख़्स उस की इन्तिहा को नहीं पहुँच सकता]

(**हवाला:** श्री गुरू ग्रंथ साहब मोहल्ला पेज:1190)

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''न तुश मात पतासत बन्धप न तुश काम न नारी।'' [यानी उसकी न तो कोई माँ है। और न ही उसका कोई बाप है। और न ही उस के बेटे और बेटियाँ हैं। और न ही उस की कोई बीवी है। और न ही उस का कोई रिश्तेदार है।] (**हवाला:** श्री गुरू ग्रंथ साहब मोहल्ला पेज:597)

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''तुम सम सर और कोना हैं।'' [यानी उस के हम पल्ला (बराबर) और कोई नहीं है।]

(**हवाला:** श्री गुरू ग्रंथ साहब आसा मोहल्ला पेज:416)

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''खालिक़ को उवैस ढाडी गावना।'' [में तो अपने खालिक़ (पैदा करने वाले) की हम्द के ही गीत गाता हूँ।]

गुरूनानक जी कहते हैं। कि ''मैं तो अपने पैदा करने वाले के ही गीत गाता हूँ।

(**हवाला:** श्री गुरू ग्रंथ दार माझ श्लोक मोहल्ला पेज:148)

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''जी अपाये रिज़्क़ दे आपे'' [यानी वही पैदा भी करता है। वही रोज़ी भी देता है।]

(**हवाला:** श्री गुरू ग्रंथ मारू मोहल्ला पेज:1042)

गुरूनानक जी फरमाते हैं। ''रब की रज़ा मन्ने सर ऊपर करता मन्ने आप गवादे।'' [रब की रज़ा और खुशनूदी के

सामने सर झुका दो और उस को अपना रब यक़ीन कर के अपनी खुदपसन्दी और खुद्दारी को मिटा दो।]

रब के माना पालने वाले के आते हैं। गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। कि अपने पालने वाले और पैदा करने वाले के सामने अपने सर को झुका कर अपने आप को मिटा दो।

(**हवाला:** श्री गुरू ग्रंथ दार माझ श्लोक मोहल्ला पेज:141)

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''अन को हुक्म वरते सब लोई।'' [हर जगह खुदा-ए-वाहिद का हुक्म चल रहा है।]

(**हवाला:** श्री गुरू ग्रंथ साहब कोड़ी मोहल्ला पेज:233)

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''हुक्म न जाई मेटिया।'' [उस का हुक्म किसी से मिटाया नहीं जा सकता।]

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''कि पूरे आलम में खुदा ही का हुक्म चलता है। वह जो फैसला और हुक्म करदेते हैं। उसको कोई न हटा सकता है। और न कोई मिटा सकता है।

गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। ''गावन तधनू खन्ड मन्डल कर कर रक्खे थारे।'' [ऐ खुदा! तेरी बनाई हुई सारी कायनात तेरे नाम की तसबीह पढ़ रही है।]

(**हवाला:** श्री गुरू ग्रंथ साहब आसा मोहल्ला पेज:347)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

नानक कागज़ लख मनां पढ़ पढ़ कीजिये भाव।
मसो तोट न आवी लेखिन पवन चलाव।।
भी तेरी क़ीमत न पवे हूँ क्यों डाखाँ नांव।।।

अर्थ : ऐ नानक लाखों मन कागज़ हों। और मैं पढ़ पढ़ कर उनके खुलासे को निकालूँ। और बेशुमार सियाही और क़लम भी हों। और वह हवा की तरह चल रहे हों। मगर मैं फिर भी तेरा हुस्न (सुन्दरता) बयान करने से क़ासिर (आजिज़) रहूँगा। ये बेशुमार कागज़ और सियाही खत्म हो जायेंगे। मगर तेरा हुस्न खत्म नहीं होगा।

(**हवाला:** श्री गुरू ग्रंथ साहब श्री राग मोहल्ला पेज:15)

अक़ीदा-ए-रिसालत

गुरूनानक जी साहब (रहमतुल्लाहि अलैहि) जिस तरह तौहीद के क़ायल थे। इसी तरह रिसालत के भी क़ायल थे। और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अल्लाह तआला का आखिरी रसूल (संदेश्ठा) और सारे रसूलों का सरदार मानते थे।

गुरूनानक जी साहब के कुछ इरशादात नक़ल किये जाते हैं।

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

सलाहत मुहम्मदी मख ही आखोंत।
खासा बन्दा सजिया सरमतराहूँ मत।।

अर्थ : हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हमेशा तारीफ करते रहो। आप (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) खुदा के खास बन्दे और सारे नबियों के सरदार हैं। (**हवालाः** जन्म साखी विलायत वाली पेज:246)

☞ उस के बाद गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

''सेई छोटे नानका हज़रत जहाँ पनाह''

अर्थ : नजात उन लोगों के लिये है। जो लोग हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पनाह में आयेंगे। और उनकी गुलामी में जिन्दगी गुज़ारेंगे।

(**हवालाः** जन्म साखी विलायत वाली पेज:250)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

उठे पहर फोन्दा फिरे खावन सन्दे रसूल।

दोज़ख पोन्दा क्यों रहे जाँ चित न होये रसूल।।

अर्थ : जिन लोगों के दिलों में रसूलुल्ला (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अक़ीदत और मुहब्बत न होगी। वह भटकते फिरेंगे। और दोज़ख (नरक) में डाल दिये जायेंगे।

(**हवालाः** श्री गुरू ग्रंथ साहब पेज:420)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

मुहम्मद मन तूँ मन किताबाँ चार।

मन खुदाये रसूल तूँ सच्चा ऐ दरबार।।

अर्थ : ऐ लोगों! हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाओ और आसमानी चार किताबों को मानो। (**हवालाः** साखी भाई बाला साहब पेज:141)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

ले पैगम्बरी आया इस दुनिया माहे।

नाव मुहम्मद मुस्तुफा हो आबे परवाहे।।

अर्थ : जिस का नाम मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) है। वह इस दुनिया में पैगम्बर (संदेश्ठा) बन कर आये हैं। उनको किसी बातिल शैतानी ताक़त का खौफ और डर नहीं है। वह बिल्कुल बे परवाह (बे फिक्र) हैं।

(**हवालाः** जन्म साखी विलायत वाली पेज:168)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

अव्वल नांव खुदाये दावर दरवां रसूल।

शेखतीत रो करताँ दरगाह पवें कुबूल।।

अर्थ : ऐ लोगो! गौर से सुन लो जिस तरह बादशाह से मिलने के लिये दरबान से मिलना पड़ता है। अगर वह अन्दर जाने से रोक दे तो कोई जा नहीं सकता। इसी तरह अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खुदा तक पहुँचने के लिये मिस्ले दरबान के हैं। अल्लाह तआला के बड़े दरबार में पहुँचने के लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की इजाज़त शरत है।

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

“لَوْلاکَ لِمَا خَلَقْتُ الْاَفْلاکَ”

(**हवालाः** जन्म साखी भाई सनी सिंह पेज:360, 452)

अर्थ : अगर अल्लाह तआला हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पैदा न फरमाते तो ज़मीन व आसमान को पैदा न फरमाते। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ही वजूद से सारी कायनात को खुदा तआला ने वजूद बख्शा है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ही नूर से सारे आलम को मुनव्वर (उज्जवल) फरमाया है।

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

हक़ पराया इस सोरास गाये।
मुहम्मद जासाताँ भरे जाँ मुरदार न खाये।।

अर्थ : हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसी की शफाअत करें गे। जो दूसरों का हक़ मारने और झूठ बोलने से परहेज़ करेगा। क्योंकि दूसरे का हक़ मारना मुसलमानों के लिये खिन्ज़ीर और हिन्दुओं के लिये गाय के बराबर है।

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

हुज्जत राह शैतान वाकेता जहाँ कुबूल।
सो दरगाह डहोई न लहन भरे शफाअत कुबूल।।

अर्थ : जो लोग शैतान का रास्ता इख्तियार करें गे और सच्चे धरम इस्लाम के बारे में हुज्जत बाज़ी करेंगे। ऐसे लोग खुदा तआला के सच्चे दरबार में नहीं जा सकते और न ही ऐसे लोगों के लिये हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम) की शफाअत कुबूल होगी।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला पेज:195)

नमाज़ की तालीम

☞ **गुरूनानक जी तौहीद व रिसालत के बाद नमाज़ की तालीम व तरगीब फरमा रहे हैं। और लोगों को जहन्नम के अज़ाब से बचा रहे हैं। और फरमा रहे हैं।**

जमाअत जमा कर पन्ज नमाज़ गुज़ार।
बाझों याद खुदायदे होसें बहुत ख्वार।।

अर्थ : ऐ लागों पाँचों नमाजों को जमाअत के साथ अदा किया करो। और इस बात को हमेशा याद रक्खो कि इन्सान खुदा की इबादत के बगैर बहुत ही ज़लील व ख्वार होगा।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:24)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

आखन सननापोन की बानी ईहा मन रतामाया।
खस्म की नदरदलहे पसन्द जनी एक धयाबा।।
लीबा कर रक्खे पन्ज साथी नांव शैतान मत कट जाई।।।

अर्थ : वही लोग सच्चे साहब यानी खुदा की निगाहों में मन्जूर और मकबूल हैं। जो अल्लाह की इबादत करते हैं और तीस रोज़े रखते हैं। और हर रोज़ पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ते

हैं। उन लोगों को अल्लाह तआला शैतान मरदूद के वसवसों से और उस के मकर व फरेब से महफूज रखेगा।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई मनी सिंह पेज:97)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

लानत बरसे तन्हा जो तर्क नमाज़ करें।।
कुछ थोड़ा बहुता खटया अपना आप वंजीं।।

अर्थ : ऐसे लोगों पर खुदा की लानत बरसती है जो लोग नमाज़ को नहीं पढ़ते। ऐसे लोग अपनी थोड़ी बहुत कमाई हुई नेकियाँ भी ज़ायअ (खत्म) कर देते हैं।

(**हवाला:** जन्म साखी विलायत वाली भाई बाला पेज:24)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

हज़रत जो फरमाया फतवा मन्झ किताब।
बे नमाज़ाँ ते सग भले जो रतें रहन सजाग।।
दती बांग न जागनी सते रहन सुभाग।
हढपलेती तन्हां के मूरख नाल जहाँ भाग।।
सुन्नत फरज़ न मननी न मननी अमर किताब।
दोज़ख अन्दर साड़ें सीखें चाढ़ कबाब।।

अर्थ : रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का ये फतवा इस्लामी किताबों में मौजूद है कि बेनमाज़ियों से वह कुत्ते अच्छे हैं। जो रात भर जागते हैं। मगर बेनमाज़ी अज़ान सुनकर भी नहीं जागते। वह लोग न तो सुन्नत पर अमल करते

हैं, और न ही फर्ज़ पर अमल करते हैं। वह लोग ऐसे हैं कि हमेशा बाक़ी रहने वाली किताब कुरआन को भी नहीं मानते। ऐसे लोग दोज़ख (नरक) के ईंधन बना दिये जायेंगे। यानी उन लोगों को दोज़ख (नरक) में डाल कर आग में जलाया जायेगा। और उनको कबाबों की तरह सीखों पर चढ़ाकर भूना जायेगा।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला पेज:327, दीन इस्लाम गुरूनानक की नजर में पेज:103-105)

सिख किताबों से वाज़ेह तौर पर शहादत मिलती है कि गुरूनानक जी पाबन्दी के साथ पाँचो वक्त की नमाज़ें पढ़ा करते थे। अपने मकान के साथ ही उन्हों ने एक मस्जिद बनवाई थी। और उस में एक इमाम रखते थे। वह इमाम जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ाता था। और कभी-कभी गुरूनानक जी इमाम बनजाते थे। और अपनी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने वालों की इमामत करते थे।

रोज़ह की तालीम शिक्षा

गुरूनानक जी जिस तरह पाबन्दी और जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ते थे। इसी तरह पाबन्दी के साथ हर साल रमज़ानुल मुबारक में एक महीने के रोज़े रखते थे। और दोसरों को रोज़ह रखने की तरगीब देते (उकसाते) थे।

☞ **गुरू नानक जी रोज़ह के बारे में फरमा रहे हैं।**

दस द्वारे मरदा होये रहो रन्जूँ
मार मनो आदरश्ट बाधो दौड़ तलब दलील
तीस दिन सेवन रंग राखो पाक मरदा सील
सीरत का तूँ राख रोज़ह नरत तुझे चाव
आतमे को निगाह राखियो सुनी तू उलमाव
तज स्वाद सहज बेकार अन्देश मन दिलगीर
महर ले मन माहैं राखियो कुफ्र तज तकबीर
नाम लहर बोझाय मन ते हुए रहो ठरूर
कबए नानक राख रोज़ह सिद्क़ रही मामूर

अर्थ : रोज़ह और बन्दगी उसी सूरत में कुबूल होगी कि इन्सान अपने मुंह और कान और आँख और जिस्म के हर-हर हिस्सों को ध्यान रख कर हर वक्त फिक्रमन्द रहे कि इन से कोई बुरा काम न हो। अपने नफ्स को मारकर अपनी आँखों को क़बू में रक्खो। और मुर्शिद-ए-कामिल की तलाश में दौड़-भाग करो। और तीस दिन के खुशी से रोज़े रक्खो। और कोई तंगी महसूस मत करो। ऐसा मर्द पाक और असील कहलाने का हक़दार है। और वह अपने पाँचो हिस्सों यानी नाक, कान, मुंह, आँख और ज़बान का भी रोज़ा रखता है। और इसी में मस्त रहती है। गोया कि वह अपने दिल की निगरानी करता है। ताकि वसवसे पैदा न हों। ए आलिम! मेरी बात गौर से सुन अपनी ज़बान के सारे चसके छोड़दे इस तरह

से तेरे दिल के तमाम अन्देशे और वसवसे दूर हो जायेंगे। ऐ नानक! इस तरह रोज़े रखने से इन्सान का दिल सच्चाई से भर जाता है।

(**हवाला:** महमान कोश पेज:236, गुरू ग्रंथ कोश पेज:568, शब्दार्थ गुरू ग्रंथ पेज:24, गुरू ग्रंथ साहब मुतरज्जिम गुरूनानक दर्शन पेज:34, श्री राग मुतरज्जिम पण्डित तारा सिंह नरोत्तम वाली पेज:44, बानी प्रकाश पेज:25)

और गुरूनानक जी ने अपने खास शागिर्द सूधी जी को नसीहत फरमाई कि तुम पाँच वक्त की नमाज़ वक्त पर अदा करते रहना। सो इस के ये गवाह हैं कि इन्सान जन्नत वाला है। और तीस दिन के रोज़े, रोज़ा रखने वाले की हिफाज़त (रक्षा) करते हैं। अगर इन्सान पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ता रहे और माह के रोज़े रखता रहे तो उस का क़दम (पाँव) हक़ रास्ते पर साबित (जमा) रहेगा। और उस की जड़ शैतान काट न सकेगा।

ज़कात की तालीम

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं। और मालदार मुसलमानों को समझा रहे हैं।**

घाल खाये कुछ हथूदे।

नानक राह पछाने से।।

अर्थ : वही लोग खुदा के रास्ते को पहचान सकते हैं।

जो लोग अपनी मुहब्बत की कमाई से गरीबों का हिस्सा निकालते हैं। और उन की मदद करते हैं। सब कुछ खुद ही हज्म नहीं कर जाते।

(**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब माहल्ला सारंग पेज:1229)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

देवे दिलादे रज़ाये ख़ुदाये।
होता न राखे अकेला न खाये।।
तहक़ीक़ दिल दानी वही बहश्त जाये।।।

अर्थ : जो लोग अपनी कमाई में खुदा को राज़ी और खुश करने के लिये गरीबों का हिस्सा अदा करते हैं। और खुद अकेले नहीं खाजाते वही लोग बहश्त (स्वर्ग) वारिस होंगे।

(**हवालाः** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:185, जन्म साखी भाई मुन्नी सिंह पेज:324)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

पये कुबूल ज़कात सो देवे आप कमाई।

अर्थ : वही ज़कात कुबूल होती है। जो इन्सान उसके फरीज़े को समझ कर खुद बखुद अदा करे।

(**हवालाः** तवारीख गुरू खालसा)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

लानत बरसे तन्हा जो ज़कात न कढदे माल।
धक्का पोंदा गैब दाहोंदा सब ज़वाल।।

अर्थ : उन पर खुदा की लानत हो जो लोग अपने माल से ज़कात अदा नहीं करते। उनका सारा माल किसी न किसी आफत से और हलाक हो जाता है।

(**हवालाः** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:25, जन्म साखी भाई मुन्नी सिंह पेज:99)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

दे न माल ज़कात जोतस दासने बयान।
अके ताँ लेवन लुट अक आफत पवे अज़ान।।
न दतारा खुदायदे न दता क़र्ज़ जहान।
वांगो साहब वले दे सब लुट लुटी शैतान।।

अर्थ : जो लोग अपने माल से ज़कात नहीं देते हैं। या तो उन का माल चोर लूट कर ले जाते हैं। या किसी हादसे का शिकार होजाते हैं। और उन को बाद में अफसोस होता है कि उस माल को यूं ही शैतान ने ज़ाय (बरबाद) कर दिया। अगर इस माल को खुदा की राह में खर्च कर दिया जाता या किसी ज़रूरत मन्द को कर्ज़ देदिया जाता, तो ये माल महफूज़ रहता, ज़ाय और हलाक न होता।

(**हवालाः** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:199)

कमाल-ए-ईमान के लिये चार शर्तें

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

"बाबू बालयाँ ईमान दयाँ चार शर्ता हैं। अव्वलः बुजुर्गाने दीन सोहबत, दोमः माल दी ज़कात, सोमः गुनाह थीं पाक, चहारुमः खुदाय दे दायहा ईमान दयाँ शर्ता हैं।

(**हवाला**: जन्म साखी भाई मुन्नी सिंह पेज:411)

अर्थ : गुरूनानक जी ने ईमान को कामिल बनाने और अमली जामा पहनाने के लिये चार शर्ते भी बयान करते हैं।

(1) **पहली**: शर्त ये है कि ईमान लाने के बाद नमाज़, रोज़ा, ज़कात के फराएज़ को अदा करने के लिये किसी बुजुर्ग की सोहबत में जाकर पड़जाये क्यों कि शरीअत इस्लामिया के हर-हर उसूल के मुताबिक़ अमल करने वाले बुजुर्गान-ए-दीन ही हुआ करते हैं। उन की सोहबत में पड़जाने से शरीअत-ए-इस्लामिया के क़ानून इबादत के मुताबिक़ अमल करने के रास्ते खुलते हैं।

(2) **दूसरी**: शर्त ये भी है कि अपने माल से ज़कात निकाल कर गरीबों की मदद करत रहे।

(3) **तीसरी**: शर्त ये भी है कि हर क़िस्म के गुनाह से बचता रहे। बाज़ मर्तबा छोटे गुनाह बड़े-बड़े गुनाहों में मुब्तला होने का ज़रीआ बनते हैं।

(4) **चौथी**: सोढी महरबान जी फरमाते हैं। कि एक मर्तबा गुरूनानक जी ने फरमाया कि ए क़ाज़ी खुदा और

रसूल का ये फरमान है कि माल से प्यार नहीं करना। जब इन्सान माल को खुदा की राह में खर्च करता है। तो वह खुदा तक पहुंचने वाला हो जाता है। और खुदा को दिल से याद करने वाला माना जाता है।

पाँच नसीहतें

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

सुनो क़ाज़ी रुकनुद्दीन पंज नसीहताँ ईहा।
'अल्लाह' दी कर बन्दगी सच बोलें नस डीहा।।
खाओ खवाओ खटके करो मशक्कत कार।
मुख सुख पवे पैटरा ईय्हू खाना सार।।
दसवां हिस्सा ओस थीं राह रब दे दीहा।
अन पछे पावे बहश्त से सच हक़ीक़त ईहा।।

अर्थ : ऐ क़ज़ी रुकनुद्दीन ये पाँच नसीहतें हैं। इन को गौर से सुन लो।

(1) **पहली:** नसीहत ये है कि अल्लाह तआला की बन्दगी और इबादत से कभी गाफिल (सुस्त) मत होना।

(2) **दूसरी:** नसीहत ये है कि दिन-रात सच बोलते रहो।

(3) **तीसरी:** नसीहत ये है कि झूट मत बोलना और न ही उस के क़रीब जाना।

(4) **चौथीः** नसीहत ये है कि अपनी मेहनत की कमाई से खुद भी खाना और दूसरों को भी खिलाना।

(5) **पाँचवींः** नसीहत ये है कि जिस रोटी को हासिल करने के लिये इन्सान का सर से पांव तक पसीना बहने लगे। वही खानी हलाल और बहतर है। ऐसी मेहनत की कमाई से दसवां हिस्सा खुदा की राह में खर्च करने वाला इन्सान बगैर किसी रोक टोक के जन्नत का वारिस होता है।

(**हवालाः** तारीख गुरू खालसा पेज:410)

गुरू नानक जी की मजलिस के खास लोग

बुजुर्गान-ए-दीन और औलिया अल्लाह के कुछ खास लोग होते हैं। उन्हीं को वह हज़रात अपने सफर में ले जाते हैं। और अपनी मज्लिस में बाज़ मर्तबा उन्ही का नाम ले कर किसी मसले को समझाते हैं।

गुरूनानक जी की अमली ज़िन्दगी और उनकी तालीम वतबलीग में चार खास-खास खादिमों (शिष्यों) का नाम आया है। इस से मालूम होता है कि ये चार हज़रात गुरूनानक के खास और सच्चे दोस्त और साथी थे। जो गुरूनानक जी के साथ रहते थे। और हर मज्लिस में शरीक होते थे। एक तो

मरवाना साहब, और दूसरे क़ाज़ी रुकनुद्दीन साहब, और तीसरे सोढी महरबान जी, और चौथे सैय्यद करीमुद्दीन।

दुरूद शरीफ की कसरत

☞ **गुरूनानक जी दुरूद शरीफ के बारे में फरमा रहे हैं।**

पीर पैगम्बर सालिक सादिक़ शोहदे और शहीद।
शेखो मशायख क़ाज़ी मुल्ला दर दुर्वेश रशीद।।
बरकत तन कर अगली पढ़े धन दुरूद।।।

सोढी महरबान जी फरमाते हैं कि गुरूनानक जी ने खुद ही इस का तर्जुमा (अर्थ) इस तरह से किया था।

अर्थ : सुनिये खाँ साहब जितने पीर हैं। जितने 'अल्लाह' के नबी और रसूल हैं जितने सालेह और सादिक़ हैं। जितने शहीद और दुर्वेश हैं। और जितने हिदायत पाने वाले नेक लोग हैं। उन सबने खुदा का दीदार पाया है। मगर उसकी इन्तिहा को कोई नहीं पा सका। जो लोग खुदा के सामने दुरूद शरीफ पढ़ते हैं। अल्लाह तआला उन लोगों से बहुत खुश होते हैं। जो आँहज़रत मुहम्मद मुस्तुफा (सल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर दुरूद शरीफ पढ़ते हैं। इस दुरूद शरीफ की बरकत से उन की दुआयें भी कुबूल होती हैं।

कलमा तैय्यबा और गुरूनानक साहब

☞ **गुरूनानक साहब पहले इस्लाम के कलमा तैय्यबा**

को समझा कर फिर बुत व मूरत की मज़म्मत बयान फरमा रहे हैं।

पाक पढ़ियों कलमा बकसवा मुहम्मद नाल मिलाऐ।

हो या माशूक़ खुदाये वाहो यातिल 'इल्ला' है।।

अर्थ : कलमा तैय्यबा में खुदा–ए–वाहिद का ज़िक्र है। और मुहम्मद (सल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रिसालत का ज़िक्र है। जो खुदा के महबूब हैं।

(**हवाला:** औसाखिया पेज:117, महमान कोस पेज:232, गुरू ग्रंथ कोस पेज:347, जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:141)

☞ **गुरूनानक साहब फरमा रहे हैं।**

पैगम्बर कलमा अखिया अकवाक खुदाए।

सभनाँ अन्दर एक है घट वृधि कही न जाए।।

अर्थ : मुहम्मद (सल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कलमा के जरीए खुदा को एक मानने की तलक़ीन फरमाई है। जो हर एक के अन्दर समाया हुआ है। किसी में कम और किसी में ज्यादा। (**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:197)

☞ **गुरूनानक साहब फरमा रहे हैं।**

कलमा याद कर नफा और कत बात।

नफस हवाई रुकने दीं तसी स्यों हो न मात।।

अर्थ : ऐ रुकनुद्दीन कलमा तैय्यबा का हमेशा विर्द करते

रहो। इस से बढ़कर और कोई चीज़ नफा मन्द नहीं। इन्सान हिर्स व ख्वाहिश के पीछे पड़कर अपनी रूहानी बाज़ी हार जाता है।

(**हवाला:** जन्म साखी विलायत वाली पेज:246, जन्म साखी गुरूदेव जी पेज:62)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

मींहा ते कलमा अख दोई दरोग कमाए।
अगे मुहम्मद मुस्तफा असके न तनहा छुड़ाए।।

अर्थ : जो लोग मुंह से कलमा पढ़ने के बाद भी झूठ बोलने से बाज़ नहीं आते झूठ बोलते रहते हैं। वह लोग क़यामत के दिन रसूल-ए-पाक (सल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफाअत से महरूम रहेंगे।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:153)

☞ गुरूनानक साहब फरमा रहे हैं।

कलमा आखयाँ ईहा गुन होए गुनाहों पाक।
अगे करे गुनाह फिर बहश्तों मिले ताक़।।

अर्थ : कलमा पढ़ने की बहुत बड़ी बरकत है। इस तरह से इन्सान गुनाहों से पाक व साफ हो जाता है। अलबत्ता उस के बाद भी कलमा पढ़ने वाले गुनाहों से बाज़ न आयें तो उन को बहेश्त (स्वर्ग) में जगह नहीं मिलेगी।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:173)

☞ **गुरूनानक साहब फरमा रहे हैं।**

करनी कलमा अख के ताँ मुसलमान सदाय।

अर्थ : हर इन्सान के लिये ज़रूरी है कि वह अपने आमाल को कलमा तैय्यबा के मुताबिक़ बनाए। वही हक़ीक़ी मुसलमान कहलाने का हक़दार है।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ दार माभ श्लोक मोहल्ला पेज:141)

☞ **गुरूनानक साहब फरमा रहे हैं।**

सोई कलमा पाक जोयस रब कलाम।

अर्थ : कलमा के ज़रीए वही शख़्स पाक व साफ हो सकता है जो अल्लाह के कलाम यानी कुरआन मजीद पर ईमान लाए। (**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:183)

बुत और मूरत की भक्ति की मज़म्मत

गुरूनान जी ने उज्जैन के राजा को एक मर्तबा नसीहत करते हुए फरमाया था। कि सब दातों का पोलक देने वाला अकाली पूरख गैर फानी (कभी समाप्त न होने वाला) खुदा ही है। इस लिये उसी से मांगना चाहिए।

(**हवाला:** इतिहास सिख गुरू साहिबान पेज:195)

☞ **गुरूनानक साहब फरमा रहे हैं।**

देवी देवा पूजिये भाई क्या मांगो क्या देय।

बाहन नीर पख्पा लिये भाई जल में बूडे तीह।।

अर्थ : जो लोग देवी और देवताओं को पूजते हैं। और

उनके सामने सर झुका कर नाक रगड़ते हैं। और उन्हें ज़रूरत को पूरी करने वाले समझते हैं। और उन से मुरादें मांगते हैं। वह गौर से सुन लें कि मूर्तियाँ और बुत न तो किसी को कुछ दे सकते हैं। और न ही कुछ ले सकते हैं।

(**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब वडहंस मोहल्ला पेज:637)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

खसम छाड़दो डूबे से वतजारिया।

अर्थ : जो लोग अपने असली मालिक खुदा को छाड़कर दूसरों से मुरादें मांगते हैं। वह लोग याद कर लें कि उन को इस तरह मूर्तियों से मांगने से कुछ हासिल नहीं होगा। ऐसे लोग नाकामी और नामुरादी की मौत मरेंगे।

(**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब दार आसा मोहल्ला पेज:470)

शान-ए-अबदीयत

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

नजर तुध अरू अस मेरी जन आप अपाया।

ताँ में कहया कहन जाँ तुझे कहाया।।

अर्थ : ऐ 'अल्लाह'! आप का काम तो करम करना है। और मेरा काम दुआ मांगना है। ऐ खुदा! तुझे किसी ने पैदा नहीं किया है। बल्कि तू खुद बखुद है। मैं तेरा ज़िक्र भी तेरी दी हुई तौफीक़ से कर सकता हूँ। तेरी तौफीक़ के बगैर मैं कुछ

नहीं कर सकता।

(**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब वडहंस मोहल्ला पेज:566)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

वडे मेरे साहब अलख अपार।

क्योंकर करूं बैनन्ती हूँ आख न जाना।।

अर्थ : ऐ मेरे खुदा तू कितना पुराना और क़दीम है। इस का अन्दाज़ा कोई भी नहीं लगा सकता है। मैं हैरान हूँ कि तेरी बन्दगी का हक़ किस तरह अदा हो सकेगा।

(**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब वडहंस मोहल्ला पेज:567)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

अगम अगो चरतों धनी सच्चा अलख अपार।

तू दाता सब मलगते अकव्व देवन बार।।

अर्थ : ऐ मेरे खुदा! तेरी इन्तिहा और मक़ाम को कोई पा नहीं सकता है। तू ही हर चीज़ का मालिक है। और तू ही दाता है। बाक़ी सारा आलम तेरे दरबार का भिकारी और मंगता है। (**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब मलार मोहल्ला पेज:1282)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

मरने की चिंता नहीं जीवन की नहीं आस।

तूँ सरब ज्याँ पर तपालदा लेके सास ग्रास।।

अर्थ : ऐ मेरे खुदा! मेरे दिल में न तो मौत की कोई फिक्र है। और न ही ज़िन्दगी का लालच है। ऐ खुदा! तू ही

तमाम जानदारों को पाल रहा है। तू ही हर शख़्स से उस की ज़िन्दगी के आमाल का हिसाब लेगा।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब श्री राग मोहल्ला पेज:20)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

मेरे साहब कौन जाने गुण तेरे।
कहे न जान ओ गुण मेरे।।

अर्थ : ऐ खुदा! तेरी खूबियाँ और अच्छाइयाँ बेशुमार (अनगिनत) हैं। जिन को कोई शख़्स भी मुकम्मल तौर पर समझ नहीं सकता। और मेरे गुनाह इस क़दर हैं जो बयान ही नहीं किये जा सकते हैं।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब गौड़ी मोहल्ला पेज:156)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

जीता समन्दर सागर नीर भरया तेते ओ गुण हमारे।
दया करे कुछ मोहरा पाओ होडो बड्डे पत्थर तारे।।

अर्थ : ऐ खुदा! जिस तरह समन्दर के अन्दर बे थाह पानी है। जिस का अन्दाज़ा मुश्किल और मुहाल है। यही हाल हमारे गुनाहों का है। आप अपने फ़ज़्ल व महरबानी कर के हमारे गुनाहों को माफ फरमा दें। आप तो डूबने वाले पत्थरों को भी नदी के पार कर देने पर क़ादिर हैं।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब गौड़ी मोहल्ला पेज:156)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

भू तेरा भांग खलड़ी मेरा चीत।
मैं दीवाना भया अतीत।।
कर क़ासा दर्शन की भूख।
मैं दर मांगो नेता नीत।।
तू दर्शन की करूँ समाए।
मैं दर मांगत भीकया पाए।।

अर्थ : ऐ ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले मालिक! मेरी भंग तो तेरा डर है। और इस भंग घती मेरा दिल है। तेरा मतवाला बन कर दुनिया का चक्कर लगा रहा हूँ। मेरे हाथ में मेरा प्याला है।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ तिलंग मोहल्ला पेज:726)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

यक अर्ज पेशे तू गुफतम दर गोश कुन करतार।
हक्का कबीर करीम तू बे ऐब परवरदिगार।।
दुनिया मक़ाम फानी तहक़ीक़ दिल दानी।
सिम सर मोए इज़राईल गिरिफ्ता दिल हेच न दानी।।
ज़न पिसर पिदर ब्रादरां कस नेस्त दस्तगीर।
आखिर बेफतम कस न दारद चूँ शवद कबीर।।

अर्थ : ऐ 'अल्लाह'! मैं आप से ये इल्तिजा (बिन्ती) और दुआ करता हूँ कि आप मेरी दुआ को कुबूल फरमा ले। आप तो सच्चे हैं और सब से बड़े करीम हैं। और पूरे आलम

को पालने वाले हैं। मैं ने बड़ी तहक़ीक़ के बाद ये बात समझली है कि ये दुनिया फना और खत्म होने वाली है। और मौत के फरिशते इज़्राईल ने मेरी पेशानी को पकड़ली है। मगर मेरा दिल इस से बे परवाह और गाफिल है। यानी मुझे इसकी कोई फिक्र नहीं है कि एक न एक दिन इज़्राईल मेरे प्राण और जान मेरे बदन और तन से निकाल लेंगे। और ये बीवी बच्चे, माँ-बाप, और भाई वगैरह मेरा हाथ पकड़ने वाले नहीं हैं। मुझे यक़ीन है कि जब मैं बेजान हो जाऊँगा तो ये लोग मेरे ऊपर नमाज़ जनाज़ा पढ़कर मुझे दफ्न करदेंगे। तो उस वक्त तेरे अलावा तेरे अज़ाब से बचाने वाला कोई नहीं होगा। ऐ मालिक! तू ही मेरा सहारा बन जा। बक़िया किसी के सहारे का भरोसा नहीं है। (**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब तिलंग मोहल्ला पेज:726)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

तू प्रभू दाता दान मत पूरा हम थारे भिकारी जियो।
मैं क्या मांगूँ कुछ थर न रिहाई हर दीजे नाम प्यारी जियो।।

अर्थ : ऐ दोनों जहाँ के मालिके हकीकी! दाता तूही है। हम सब तेरे ही दर के भिकारी हैं। मैं सोच रहा हूँ कि तुझ जैसे गैरफानी खुदा से क्या मांगूँ? क्योंकि दुनिया की हर चीज़ फना और खत्म हो जाने वाली है। इस लिये दुनिया और दुनिया की चीज़ों का मांगना ऐसा ही है कि आप से फना होने वाली चीज़ को मांगता हूँ। इस लिये ऐ मालिक! मैं आप से

दुआ कर रहा हूँ। और आप को ही मांग रहा हूँ आप मुझे मिल जायें। क्यों कि आप की ज़ात फना होने वाली नहीं। अगर आप मिल जाएं तो हम को सब कुछ मिल गया। इस लिये आप को ही मांग रहा हूँ।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब सोढ़ मोहल्ला पेज:597)

रसूलों और पैगम्बरों के बारे में अक़ीदा

☞ **अब इनके बारे में गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

सवा लाख पैगम्बर ताँ के।

अर्थ : खुदा की तरफ से इस दुनिया में सवा लाख पैगम्बर आये हैं।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब भैरों कबीर पेज:116)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

सवा लाख पैगम्बर आये दुनिया माहीं।
आपो अपनी नौबतैं समझो चलाए राहे।।

अर्थ : इस दुनिया में सवा लाख पैगम्बर भेजे गये हैं। उन लोगों ने अपने अपने वक्त पर लोगों को सिराते मुस्तकीम यानी सीधे रास्ते का पता दिया है। और लोगों को खुदा तक पहुँचाया है।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:143)

आसमानी किताबों के बारे मे अक़ीदा

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

चार किताबें इक है चारों क़ौल खुदाए।
चारों क़दम स्वाब दे क़ाज़ी दिल दच लाए।।

अर्थ : चारों किताबों में खुदा ही का जिक्र है और उन चारों में उन्ही की बातें हैं। क़ाज़ी साहब स्वाब के चारों कदम अपने दिल से बसाओ। स्वाब सच्ची इबादत (पूजा) और जिक्र इलाही है। (**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:148)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

सुनो सैय्यद करीम दीन चारों मन किताब।
चारों क़ौल खुदाय दे रोयाँ चढ़न हिसाब।।

अर्थ : ऐ सैय्यद करीमुद्दीन! मेरी बातों को गौर से सुनो। चारों किताबों पर इमान लाओ। उन चारों के उन्दर खुदा की बातें हैं। उन के इनकार से इन्सान खुदा के अज़ाब का मुस्तहिक़ बन जाता है।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:166)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

मुर्शिद मन तो मन किताबाँ चार।
सुन खुदाए रसूल नूँ ऐ सच्चा दरबार।।

अर्थ : पीर व मुर्शिद को मानो और चारों किताबों को

मानो। क्यों कि इन किताबों पर ईमान लाने और उन को मानने की वजह से इनसान के दिल में खुदा और उस के रसूल पर ईमान पैदा होता है। और खुदा के दरबार तक इन्सान पहुंच जाता है।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:222)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

देख तौरेत इन्जील नूँ ज़बूरे फुरकाँ।

ईहू चार कुतेब हैं पढ़कर देख कुरआँ।।

अर्थ : चारों किताबें खुदा की तरफ से उतारी गई हैं। कुरआन पढ़कर देख लीजिये उन चारों किताबों का तज़किरा उस में मौजूद है।(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:176)

कुरआन के बारे में अक़ीदा

☞ **गुरूनानक जी कुरआन के बारे में फरमा रहे हैं।**

कल वीरान कुतेब कुरआन, पोथी पंडित रहे पुराण।

नानक नांव भया रहमान, कर करता तू एको जान।।

अर्थ : कलयुग ज़माना में सिर्फ कुरआन खुदा की तरफ से मन्जूर शुदा किताब है। इस के नाजिल होने के बाद सारी दूसरी पोथियाँ और पुराण वगैरह सारी किताबें मन्सूख हो चुकी हैं। अब खुदा की सिफत रहमान ही का सिक्का बाज़ार में चल रहा है। (**हवाला:** गुरू ग्रंथ राम कली मोहल्ला पेज:903)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

कुरआन कुतेब कमाइए, भवऊटी अत तन लाइए।
सच बूझन उन जलाइए, बिन तेल दूवा इयूँ बने।।

अर्थ : गुरूनानक जी ने अपने इस इरशाद का मतलब इस तरह खुद ही बयान किया है। ऐ शेख जी! कुरआन जो कुछ कहता है उस पर अमल करो। और खुदा से डरते-डरते सिराते मुस्तकीम यानी सच्चे रास्ते पर चलते रहो। और कुरआन शरीफ के अहकामात पर अमल करो। और खौफ व डर को उस में बत्ती बनाओ। कुरआन शरीफ पर जो अमल होगा वह उस बत्ती का काम देगा गोया की ये दिया और बत्ती होगा। और खुदा का सच्चा नाम बत्ती के मानिन्द होगा। और इस तरह जोत यानी रोशनी चमक उठेगी। और ये नूरी चराग रोशन होजायेगा। (**हवाला:** जन्म साखी विलायत वाली पेज:265)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

तरीहे कूँटा भालियाँ तरेहे सूदे भेद।
तौरेत इन्जील ज़बूर तरे बढ़ सुन डढे वेद।।
रहिया फुरकाँ कतीबड़े कलजुग में परवान।।।

अर्थ : मैं ने चारों तरफ तलाश किया और सोच और विचार और तहकीक से काम लिया। मैं ने तौरेत और इन्जील और ज़बूर को भी खूब पढ़ा। और उनकी छान बीन की। उन के अलावा मैं ने वेदों को खूब गौर से पढ़ने और सुनने की

कोशिश की। मेरी छान-बीन और कोशिशों का नतीजा ये निकला कि अब उन सारी किताबों का जमाना खत्म हो चुका है। मौजूदा ज़माना के लोगों के लिये मन्जूर शुदा काबिले अमल किताब सिर्फ कुरआन शरीफ है।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:274)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

तरबहे हरफ कुरआन दे तरबहे सिपारे कीन।
तस विच बहुत नसीहताँ सुन कर करो यकीन।।

अर्थ : यानी कुरआन शरीफ के अन्दर लोगों की हिदायत के लिये बहुत सी नसीहतें लिखी हैं। उन को गौर से सुनो, और पढ़ो, और उन पर अमल करो।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:221)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

खावत कसम कुरआन दी कारण वनी हराम।
आतिश अन्दर साड़ीईन आखे नबी कलाम।।

अर्थ : दुनयावी अगराज और जरूरयात की खातिर कुरआन शरीफ की क़सम खाना बहुत बुरी बात है। और हराम है। ऐसे लोग मरने के बाद दोजख में जलाये जायेंगे। ये खुदा के सच्चे रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का फरमान है। (**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:149)

फरिश्तों के बारे में अक़ीदा

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

सब्र सबूरी सादिकाँ तोशा मलाईकाँ।

अर्थ : फरिशतों का तोशा सब्र है। और उन को खाने पीने की ज़रूरत नहीं।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब श्री राग मोहल्ला पेज:84)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

सुनो सैय्यद करीम दीन जानो सच नाहे।

नूरों चार फरिशते चार कुतेब गवाहे।।

अर्थ : ऐ सैय्यद करीमुद्दीन! तुम सच्चाई को नहीं जानते। गौर से सुनो। खुदा की आसमानी चारों किताबें इस बात की गवाही देती हैं। कि 'अल्लाह' तआला ने चार बड़े-बड़े फरिशतो को पैदा फरमाया है।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:169)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

इसराफील, जिबराईल, मीकाईल पछान।

इजराईल फरीशता चार मुअक्किल जान।।

चारों वारिस तख्त दे हुक्मी बन्दे चार।

सदा हुजूरी तस रहें जोथियों से औतार।।

अर्थ : इसराफील, जिबराईल, मीकाईल, इजराईल यही

चार फरिशते हैं। अल्लाह के खालिस मुअक्किल कहलाये जाते हैं। ये चारों 'अल्लाह' के तख्त के वारिस हैं। और 'अल्लाह' के हर हुक्म की इताअत पूरी तरह अन्जाम देते हैं। उन के अन्दर हुक्म के खिलाफ कोई काम करने का माद्दा ही नहीं है। और वह अपने वक्त के नबी और रसूल के पास आते थे। और खुदा का पैगाम भी उनके पास लाते थे।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:241)

अक़ीदा-ए-क़यामत

☞ गुरूनानक जी क़यामत के बारे में फरमा रहे हैं।

'अल्लाह' अलख अगम कादिर करत हार करीम।
सब दनी आवन जावनी मुकाम एक रहीम।।
मुकात तस नूँ आखिये जस सस होये देख।
आसमाँ धरती जलसी मुकाम ओही एक।।
वन रद चले नस सस चले तार का लख पलवे।
मुक़ाम ओही एक है ताँका सच बगोए।।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ श्री राग मोहल्ला पेज:64)

न सस सार मंडलो, बहुत दीप न जलो।
आन पवन थर न कोई, एक तूही एक तूही।।

(**हवाला:** शब्दार्थ गुरू गंथ साहब पेज:46)

अर्थ : एक दिन ऐसा भी आयेगा कि ये सातों आसमान

और चाँद व सूरज टूट फूट जायेंगे। और ज़मीन के अन्दर की सारी चीजें भी खत्म हो जायेंगी। उस वक्त सिर्फ एक ही खुदा की जात बाकी रहेगी।

हिसाब व किताब के बारे में अक़ीदा

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

नानक आखेरे मनानी सुनिए सिख सही।
लेखा रब मंगीयाँ बैठा गढ वही।।
तलबान पोसन आकियाँ बाकी जहाँ रही।
इजराइल फरिशता होसी आते तिही।।
आवन न जान सोझई भेड़ी गली फही।
कोड़ लखोटे नानका ओड़क सच रही।।

अर्थ : 'अल्लाह' तआला हर शख्स से उस के आमाल का हिसाब लेगा। और उसी के मुताबिक हर शख्स को सजा और जज़ा देगा। जिन के आमाल अच्छे होंगे उनसे अच्छा स्लूक किया जायेगा। जिन लोगों के आमाल बुरे होंगे उन को सज़ा दी जायेगी। और उनके गले में तौक़ डाले जायेंगे। आखिर जीत हक़ और सच्चाई की होगी। गलत और बातिल हार जायेगा। (**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब दार राम कली श्लोक पेज:952)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

बाक़ी वाला तलबए सर मारे जन्दार जीओ।

लेखा मंगे देवना करो विचार जीओ।।
सच्चे की नवाबरे बखिए बखशनहार जीओ।।।

अर्थ : जिन लोगों के आमाल बुरे होंगे उन को खुदा के सामने बुलाया जायेगा। और उनको वहशी और जंगली जानवरों की तरह सज़ा दी जायेगी। उन से उन के आमाल के मुताबिक़ स्लूक किया जायेगा। और सच्चे लोगों को मुआफ करने वाला खुदा मुआफ करदेगा।

(**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब मोही मोहल्ला पेज:169)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

हैबत तत दिन की जिस दिन अदल करे।
बाब असाडे रुकने दीन कहियाँ हुक्म करे।।

अर्थ : मुझे उस दिन का खौफ और डर है। जिस दिन 'अल्लाह' तआला लोगों से उन का हिसाब लेगा। और उन के साथ अदल और इन्साफ का मआमला करेगा। ए रुकनुद्दीन! हम उस दिन से इस लिये डर रहे हैं कि 'अल्लाह' तआला हमारे साथ क्या फैसला करेगा।

(**हवालाः** जन्म साखी विलायत वाली पेज:250)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

कलजुग शेख नयाऊँ है जो दगाड़े पावे सोये।
होर कसे न मारिये भावें कोई हुए।।
जीहड़ा अलग गुनाह करे तस अंगे मिले सज़ाये।
विच किताबाँ लिखियाँ आखिया पाक खुदाये।।

अर्थ : हर इन्सान अपना ही किया पायेगा किसी दूसरे को इल्ज़ाम देने की ज़रूरत नहीं है। यानी इन्सान मरने के बाद उस के रिश्तेदार और उस के भाई और उसकी बहन और उस के बच्चे मदद नहीं करेंगे। कोई किसी के काम नहीं आयेगा। बस सिर्फ अपने ही किये हुए आमाल काम आयेंगे। इस लिए इन्सान को खुद अच्छे-अच्छे आमाल कर के दुनिया से आखिरत की तरफ जाना चाहिए।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब आसा मोहल्ला पेज:423)

पुल सिरात का क़ायम होना

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

सुनो कनीस पुल सिरात वालों की कहाये।
खन्डे नालों तर खड़ी अग लोहे जीवन तपताये।
तले नदी खून रत दी ओथे लेत तराये।
सब उठोवें विच फिरें जो कट-कट पापियाँ खाये।
कट तारे पर सलात ईहा करके कहे खाये।

अर्थ : पुल सिरात बाल से बारीक और तलवार से तेज़ होगा। और जिस तरह लोहा आग में गरम होजाता है इसी तरह वह तप रहा होगा। उस के खून और पीप की नदी होगी। और उस नदी में साँप और बिच्छू होंगे। जो बुरे लोग कट कर उस में गिर जायेंगे। वह सांप और बिच्छू उन को काट-काट कर

खायेंगे। और दोज़ख में गिरने वाले खूब शोर मचायेंगे और चिल्लायेंगे मगर उनकी एक बात भी नहीं सुनी जायेगी। वह लोग अपनी बुराइयों की सज़ा पाते रहेंगे।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:148)

जन्नत और दोज़ख का अक़ीदा

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

कपड़ा विप सोहा विना चन्ड दुनिया अन्दर जाउना।
मन्दा चंगा अपना आपे ही केता पाउना।।
हुक्म किये मन जोनो दे राह भीड़ से अगे जाउना।
नन्गा दोज़ख चालिया तादसे खरा डराउना।।

अर्थ : यानी इन्सान अपना खूबसूरत और कीमती कपड़ा इस दुनिया में छोड़कर चला जाता है। और सिर्फ नेक और बुरे अमल उस के साथ जाते हैं। और दुनिया से आखिरत की तरफ जाने वाले मुसाफिर वहाँ जाकर अपने नेक और बुरे आमाल का बदला पाते हैं। जो लोग इस दुनिया में तकब्बुर और गुरूर में आकर अपनी मरजी के मुताबिक चलते रहते हैं। वह आने वाली आखिरत की दुनिया में तंगी और मुसीबत की जिंदगी गुजारते हैं। जब वह लोग दोजख में डाल दिये जायेंगे तो उन के सामने भयानक मंजर आयेगा तो वह लोग अफसोस करेंगे

मगर उस घड़ी उनका अफसोस करना कोई काम न देगा।

(**हवाला:** गुरू गंथ साहब दार आसा श्लोक पेज:47)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

ओथो सच्चो ही सच निबड़े चन दुख कड्डे हजमालियाँ।

थावन न पायन कोड़ियाला मुंह काले दोजख पालिया।।

अर्थ : खुदा के दरबार में सच्चाई के फैसले किये जायेंगे। वह किसी पर कोई ज्यादती और जुल्म नहीं करेंगे। जो लोग बुरे-बुरे काम कर के इस दुनिया से मरकर आखिरत की तरफ जायेंगे उन लोगों को चुन-चुन कर अलग कर दिया जायेगा। और उन के मुंह को काला करके दोजख में धकेल दिया जायेगा।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब दार आसा श्लोक मोहल्ला पेज:493)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

उठे पहर भोंदा फिरे खवन संडरे सूल।

दोजख पोंदा क्यों रहे जां चित न होए रसूल।।

अर्थ : जिन लोगों के दिलों में मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अज़मत और मुहब्बत नहीं है। वह लोग इस दुनिया में आठों पहर भटकते फिरेंगे। और मरने के बाद उनका ठिकाना दोजख (नरक) होगा।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब गौड़ी श्लोक मोहल्ला पेज:280)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

सुनो इमाम करीम दीन नानक कहे फकीर।
हक बिगाड़ा जोखसन मरस्सत हुऐ जहीर।।
नंदक चोर जुवारे जे मतर धर वही हुए।
बंदर रिछ कलंदरी बेल गधाते हुए।।
जीवन्दे दुख सहार दे मर्द दोजख में जाए।
लेना देना रूह ने मरे कदाए।।

अर्थ : ऐ इमाम करीमुद्दीन! गौर से सुनो नानक फकीर कहता है। कि जो लोग दूसरों का हक़ खाते हैं। उनकी मोत बड़ी तकलीफ से होती है। झूठे और चोर और जुवा खेलने वाले अपने दोस्तों को धोका देने वाले बंदर और रीछ और बैल व गधे की शक्ल में बना कर दोज़ख में डाल दिये जायेंगे। और वहाँ पर बहुत दुख और तकलीफ उठायेंगे।

(**हवालाः** तवारीख गुरू खालसा पेज:276)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

जो मुख खोटे होवनगे से फिर नरक जोनी पायेंगे।

अर्थ : जो लोग जैसा करेंगे नरक (दाजख) में उस की सज़ा पायेंगे। (**हवालाः** गुरू ग्रंथ साहब दार श्लोक पेज:41)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

ग्लैं बहश्त न जाइये छोटे अमल कमाइये।

अर्थ : कोई इन्सान सिर्फ बातें बनाने से जन्नत में नहीं

जायेगा उस के अन्दर तो वही लोग जाएंगे जो लोग अपनी जिन्दगी नेकियों में गुजारते हैं। और अच्छे काम करते हैं।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब दार रामकली मोहल्ला श्लोक पेज:951)

☞ **गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।**

राह दसाए ओथे को जाये।
करनी बाझों बहश्त न जाये।।

अर्थ : अगली दुनिया में बगैर अच्छे-अच्छे अमल किये हुए कोई भी जन्नत में नहीं जा सकता। खुदा ने जन्नत को सिर्फ अच्छे काम करने वालों के लिये बनाया है। गुनहगार और बुरे लोगों को वहाँ पर दाखिल नहीं किया जायेगा।

(**हवाला:** गुरू ग्रंथ साहब दार रामकली मोहल्ला श्लोक पेज:951)

सहाबा के बारे में अक़ीदा

☞ **अब गुरूनानक साहब सहबा (रजियल्लाहु अन्हुम अजमईन) के बारे में अपनी अक़ीदत बयान फरमा रहे हैं।**

मन पैगम्बर बुस्तफा अतस दे चारों यार।
उमर खत्ताब अबूबकर उस्मान अली दी चार।।
चारों या मुस्लिमीन चार मुसल्ला।
पांचवाँ नबी रसूल है जिन साबित केतान।।

अर्थ : उमर फारूक और अबूबकर और उस्माने गनी व अली (रजियल्लाहु अन्हुम अजमईन) ये रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) के चार खास-खास साथी हैं। और चार मुसल्ले हैं। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पाँचवें हैं। उन के जरीए इस्लाम मुकम्मल हुआ और पूरी दुनिया में फैल गया। इस्लाम का दरवाजा हर शख्स के लिये हर वक्त खुला हुआ है। मतलब ये है कि जिस का जब जी चाहे उस का दामन पकड़ कर जन्नत में चला जाये।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई मुन्नी सिंह फिलमी वरक पेज:114, जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:146)

☞ गुरूनानक जी हजरत अली (रजियल्लाहु अन्हु) के बारे में फरमाते हैं।

मुर्तजा अली शेरे खुदाई, खालिक़ ताँ कोदी अताई।

अर्थ : हजरत अली-ए-मुर्तज़ा (रजियल्लाहु अन्हु) खुदा के शेर हैं। और अल्लाह तआला ने आप को ये मर्तबा और मुक़ाम इनायत फरमाया है।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:210)

☞ गुरूनानक जी फरमा रहे हैं।

दिल में तालिब तीरथ किया दिल में मुहम्मद जानां।
दिल में हसन हुसैन फातिमा दिल में है मौलाना।।
दिल में हर महब्बत काबा दिल में गोरिस्तानी।
हक़ व हलाल दोए दिल भीतर खाह पछान पछानी।।

अर्थ : मेरे दिल में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम) बसे हुए हैं। सब से बड़ी तीर्थगाह मेरी यही है। बस अब मुझे इधर-उधर तीर्थ करने के लिए जाने और भागने की जरूरत नहीं है। इसी तरह मेरे दिल में इमाम हसन और इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) भी और हज़रत फातिमा ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) भी और काबा शरीफ भी बस गये हैं। और उनकी मुहब्बत और अकीदत मेरे कल्ब व जिगर में समा गयी है। इस लिये मैं हलाल व हराम और जाइज़ व ना जाइज़ को पहचानता हूँ।

(**हवाला:** जन्म साखी भाई बाला साहब पेज:536)

मुहब्बत की सच्चाई

हज़रत नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इरशाद है।

1. अपने महबूब के कलाम को उसके गैर के कलाम पर पसन्द करे।
2. अपने महबूब की हमनशीनी को उसके गैर की हमनशीनी पर पसन्द करे।
3. अपने महबूब की खुशनूदी को उस के गैर की खुशनूदी पर इख्तियार करे।

लम्हा-ए-फिकरिया

सिख साहिबान और भाइयों से गुज़ारिश है कि वह इस किताबचा को खूब गौर से पढ़ें। और असल किताबों से मिला कर देखें कि हमारे मज़हबी पेशवा और बुजुर्ग का मज़हब क्या था? और वह क्या चाहते थे? और हम उनके मज़हब और तरीके को इख्तियार किये बगैर न नजात पा सकते हैं। न आखिरत के अज़ाब से बच सकते हैं। न हमारे मज़हबी पेशवा जनाब गुरूनानक जी की रूह हम से खुश हो सकती है।

और हक़ परस्त और हक़ के तलबगार लोगों का हमेशा ये तरीक़ा रहा है कि हक़ ज़ाहिर होने पर वह हक़ को कुबूल करते हैं। और किसी की परवाह नहीं करते यहाँ तक कि दुनिया के तख्त व ताज को ठुकरा कर हक़ को कुबूल करते हैं। और उसके लिये दुनिया की हर तकलीफ को गवारह (बरदाश्त) करते हैं। आखिरत में जहन्नम के दायमी अज़ाब से छुटकारा हासिल करके जन्नत की अबदी और दायमी (हमेशा रहने वाली) नेमतों को हासिल करते हैं।

अक़्ल व बसीरत रखने वाले और हक़ व सदाक़त के तलबगार का हमेशा यही शिआर रहा है कि बन्दे का मक़सद सिर्फ सच्ची खैर ख्वाही और हक़ की रहनुमाई है। बाक़ी

हिदायत अल्लाह तआला के कब्ज़े व कुदरत में है। और 'अल्लाह' तआला की आदत यही है कि वह हक़ व सदाक़त के सच्चे तलबगारों को हक़ से महरूम नहीं करता।

"والله يهدى من يشاء الى صرط مستقيم"

"वल्लाहु यहदी मन यशाउ इला सिरातिम मुस्तक़ीम"

हम को चाहिए कि कम से कम थोड़ा वक्त निकाल कर नहा धोकर अपने खालिक़ व मालिक हक़ तआला शानहू से हिदायत की दुआ मांगा करें।

وما توفيقى الا بالله عليه توكلت واليه انيب

ربنا تقبل منا انک انت السميع العليم وتب علينا

انک انت التواب الرحيم بحرمة حبيبک

سيد المرسلين صلى الله تعالىٰ

على خير خلقه سيدنا

ومولانا وحبيبنا

محمد

وآله وصحبه وبارک وسلم

मुहम्मद फारूक़ गुफिरालहू

नज़ील मदरसा तालीमुद्दीन इस्पंगवेच दक्षिण अफरीक़ा

16 जमादिउल ऊला 1431 हि0 दिन सनीचर

इन्तिख़ाब फरीद नामा

शेख फरीदुद्दीन गंज शकर (रहमतुल्लाहि अलैहि) जो ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी (रहमतुल्लाहि अलैहि) के खलीफा हैं। और ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (रहमतुल्लाहि अलैहि) ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी (रहमतुल्लाहि अलैहि) के खलीफा और जानशीन हैं। ख़्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर (रहमतुल्लाहि अलैहि) 93 वर्ष की उमर में सन 1266 ई0 में वफात पा गये। शेख फरीदुद्दीन के सिलसिले के बारहवें जानशीन शेख इब्रहीम उर्फ शेख बरहम सिखों के पहले गुरू शेख गुरूनानक जी के हम अस्र थे। और गुरूनानक जी उन के अक़ीदतमन्द थे। और उनसे बहुत फैज़ हासिल किया। और शेख इब्राहीम (रहमतुल्लाहि अलैहि) ही से उन को ख़्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर (रहमतुल्लाहि अलैहि) का मन्जूम कलाम फरीद नामा हासिल हुआ। जिस को गुरूनानक जी ने अपने गुरू ग्रंथ में शामिल किया। जिसको अलग से भी सिख हज़रात 'फरीदनामा' के नाम से शायेअ करते रहे हैं।

सिखों के मशहूर शखसीयत ज़ाहिद अबरूल साहब ने

भी फरीदनामा को बहुत अक़ीदत के साथ बहुत उम्दा और बहुत खूबसूरत तरीक़े पर शायेअ किया है। और उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी में इस का तर्जुमा भी शामिल किया है। जनाब प्रोफेसर सतेंद्र सिंह दिल्ली यूनिवर्सिटी ने इस पर मुकद्दमा लिखा और खिराजे अक़ीदत पेश किया है। जो दिल्ली में मुन्दर्जा पते से हासिल किया जा सकता है।

श्री बलराज कोमल, ई–139, कालका जी, नई दिल्ली।

इसी से मुन्तखब करके चन्द अशआर पेश किये जाते हैं। सिख हज़रात इन अशआर से अन्दाजा लगा सकते हैं। कि इन अशआर से किस तरह इस्लाम की रोशनी नज़र आती है। और सिखों के सब से बड़े गुरू जनाब गुरूनानक जी साहब इस से किस तरह फैजयाब हुए हैं। खुदाए पाक मौजूदा सिख साहिबान को भी इस्लाम को समझने और इस को कुबूल करने की तौफीक़ अता फरमाये। **आमीन**

फरीद नामा

फरीदा! कुछ न कहो उन्हें, करें जो तुम पर वार।
चूमों उनके पाँव को, पहुंचो अपने द्वार।।

अक़्ल मन्द है तू अगर लिख मत काले लेख।
सर नीचा रख कर सदा, अपने अन्दर देख।।

खोलो आंख फरीद जी, दाढ़ी हुई कपास।
जन्म बहुत पीछे रहा, अन्त बहुत है पास।।

जब खटना था मस्त था, तुझे न था कुछ याद।
फरीदा! पक्की हो गयी, मौत की अब बुनियाद।।

देख-देख आँखें गयीं, सुन-सुन बहरे कान।
शाखे जिस्म भी पक गयी, ढूंढे मिले न जान।।

जिन अखिन जग मोह लिया, काजल भी था भीर।
देखी उन पे लगी हुई, एक परिन्द की डार।।

पीरी में वह क्या जपे बिन जप जोबन खोय।
सांय के संग प्रेत कर, रंग नवेला होय।।

रोज़ नसीहत दीजिये, फिरे न फिर भी ध्यान।
ऊँचे बोल भी बे असर, मन में हो जब शैतान।।

खाक की निन्दा मत करो। उस सा और न कोय।
जीते जी पैरों तले, मरें तो ऊपर होय।।

फरीदा बन रस्ते की घास।
अगर है पिया मिलन की आस।।

रौंदें सब बच पाऐं कुछ एक।
जो पहुंचैं सांई के दर नेक।।

जंगल-जंगल क्या फिरे, काँटों पर क्या सोय।
बाहर क्या ढूंढे उसे, मन अन्दर जो होय।।

लोभ जहाँ वहाँ नीहा नहीं, झूटी मोहमल बात।
टूटा छप्पर कब तलक, सह पाये बरसात।।

जंगल पर्वत फिर के भी थक कर हुआ न चूर।
आज ये कूज़ा लग रहा है, जैसे कोसों दूर।।

कूकर बोकर दिल में है, अंगूरों की ताक।
कातें ऊन और ख्वाब में, रेशम की पोशाक।।

कुछ जो छुपाऊँ मीत से, आये जो मेरे द्वार।
आग में लकड़ी की तरह, जलूँ हज़ारों बार।।

शकर, खंड और शहद, गुड़, दूध भैंस का होय।
ये सब मीठे हैं मगर, रब से न मीठा कोय।।

पगड़ी ही का ध्यान है, मैली न होने पाय।
गाफिल रूह को क्या खबर, सर को भी मिट्टी खाय।।

रूखी सूखी खाय के ठण्ठा पानी पी।
देख पराई चपड़ी मत तरसा अपना जी।।

रोटी मेरी काठ की, भाजी मेरी भूक।
चपड़ी जो खायें दुख सहें, मुझ से न हो ये चूक।।

आज न सूई कन्त संग, अंग अंग टूटा जाय।
पूछ विधागन से ज़रा, कैसे उमर बिताय।।

बरह-बरह सब कह रहे, बरह तो है सुल्तान।
जिस में बरह पैदा न हो, वह तन है शमशान।।

चिन्ता खाट है, बान दुख, बरह ही जीवन रेख।
यही है अपनी ज़िन्दगी, सच्चे साहब देख।।

चार गंवाए भटकते, सौ के गंवाए चार।
रब मांगे लेखा कि तू, आया था किस कार।।

विश के पोधे हर तरफ, लेप खांड के ओढ़।
मरे बीजते और कुछ, बजी गयी छोड़।।

गैर के दर पे बैठना, सांई! मुझे न दे।
जो रखना है तो, जान मेरी लेले।।

बूढ़े हुए फरीद जी, कांपे दीहा का जाल।
अन्त तो होगा खाक में, चाहे मिलें सौ साल।।

सर पे हीड़ा कांधे कठार, जंगल में सरदार।
मैं तो ढूँढू सांई को, ढूँढे आग लोहार।।

चौबारे कोठे महल सब कुछ छोड़ गये।
झूठे सब सौदे हुए, कब्र में जब उतरे।।

क्षत्र, दमामे, तूतियां, भाट जिन की जान।
फरीदह! हव भी यतीम बन, जा सोए शमशान।।

दोनों दियों के सामने, मलकुल मौत खड़ा।
गढ़ जीता, घट लूट कर, चल दिया दिये बुझा।।

गुदड़ी में सोंटा के लगे जान पे एक न मेख।
अपने अपने वक्त पर चले गये सब शेख।।

भेस फकीरी मुंह में गुण दिल में मगर है घात।
बाहर सब उजला लगे, अन्दर काली रात।।

देख क्या कमाद पर तिलों पे बीते तेल।
कागज़ कूज़े कोयला, होवे हाल बुरा।।
काम बुरा जो भी करे, ऐसी मिले सज़ा।।।

सर कपास, दाढ़ी कपास, मूछ भी हुई कपास।
रे मन गाफिल बावरे, छोड़े न क्यों रंग रास।।

जो दिन ऋतु में कन्त का, कभी किया नहीं ध्यान।
अब चीखे है कब्र में, क्यों न मिली तुझे आन।।

चौबारे, कोठे, महल, उन से न रक्खो प्रीत।
ढीरों खाक पड़ेगी जब, कोई न होगा मीत।।

छत की दाड़ कहाँ तलक, उठ अब नींद से जाग।
मिले हैं जो गिन्ती के दिन, वह भी हैं भीगा भीग।।

जिन कामों में गुण नहीं, भूलिये ऐसे कार।
शर्मिन्दा मत होइये, सांई के दरबार।।

धन दौलत से मोह न रख, मौत बड़ी बलवान।
आखिर जाना है जहाँ, रहे वहीं का ध्यान।।

काले हैं कपड़े मेरे, काला मेरा भेश।
भरा गुनाहों से मगर, लोग कहें दुर्वेश।।

साहब की कर चाकरी, दिल से भरम मिटा।
दुर्वेशों को चाहिए, धीरज पेड़ों सा।।

कोदौं के खेतों से भी हंस उड़ाने जायें।
पागल हैं नहीं जानते, हंस न कोदौं खायें।।

कल्लर की एक पोखरी, हंस जो उतरे आन।
चोंच भिगो कर चल दिये, उड़ने पर था ध्यान।।

कीड़ों भरी ज़मीन में, ईंट सरहाने होय।
यगों–यगों तक जिस्म तब, एक ही करवट सोय।।

चले गये पंक्षी वह सब जिन से बसा था ताल।
सूखे गाया ताल भी, होंगे कंवल बेहाल।।

फूट गया रंगीन घड़ा, टूटी सांस की डोर।
इज़्राईल अब चल पड़ा, अगले घर की ओर।।

उठो फरीद वजू करो, सुबह की पढ़ो नमाज़।
करे न सजदह काट दो, अपना सरे नासाज़।।

पाँचो वक्त नमाज़ को मस्जिद जो न आय।
करे न जो भी बन्दगी, सग का दरजा पाय।।

कहाँ तेरे माँ बाप हैं, जिन्हों ने जन्म दिया।
छाड़ के तुझ को चल दिये, फिर भी न तू समझाा।।

सजदे में जो न सर झुके, दो उसे यही सज़ा।
हांडी तले जलायके काम लो ईंधन का।।

फरीदा! मन हमवार कर, वहम व गुमाँ को त्याग।
आगे कभी न आयेगी, दोज़ख की कोई आग।।

बुरे का भी कीजिये भला, मन में न गुस्सा आय।
दीहा रोगों से बची रहे, पास से कुछ भी न जाय।।

दाँत, आँखें टांगें गयीं, कान हुए बहरे।
जिस्म ढला क्या सब अज़ीज़, उस को छाड़ गये।।

दुनिया सुहाना बाग है, हम पंक्षी महमान।
बजी है नोबत सुबह की, बांधो अब सामान।।

नदी! न अपना तट गिरा, देना पड़े हिसाब।
माना रब की रज़ा में हैं तेरे पेच व ताब।।

मैं समझूँ दुख बस बुझे, सकल जगत दुख राग।।
देखूँ ऊँचा होके तो घर-घर यही है आग।।

तन की मांगैं बढ़ रहीं, और बढ़ता जाय।
कानों में भरी रुई, कुछ भी न अन्दर आय।।

बातों के धनी बीसियों, असल मिले नहीं एक।
सुलगूँ उपलों की तरह, मिले न साजन नेक।।

तन सूखा पंजर हुआ, तलवे नोचैं काग।
अब न रब पहुंचे तो फिर, बन्दे काहे भाग।।

रब की खुजूरें हैं पक्की, शहद की नदी बहे।
उमर से मनफी हो के ही, दिन रस में गुज़रे।।

कागा! नोच न ये बदन, बस में है तो उड़ जा।
जिस में मेरा सांई बसे, उस का मास न खा।।

कागा! पंजर नोच कर, खालो सारा मास।
मत छूव्व ये दो नयन, पिया की देखें आस।।

कितने ही मेरे देखते, छाड़ गये हैं पराण।
सब को जब अपनी मड़ी, रक्खूँ अपना ध्यान।।

कब्र सदा ये दे रही, बेघर! घर को आजा।
मैं ही हूँ मन्जिल तेरी मुझ से मत घबरा।।

संवरे तो मुझ में मिले, सुख का सवेरा होय।
जो तू मेरा हो रहे, सब जग तेरा होय।।

महल भी सूने हो रहे, बसा ज़मीन का तल।
रूहें क़कबिज़ हो रहीं, कबरों पे हर पल।।
करो बन्दगी शेख जी, रुखसत आज कि कल।।।

लगे किनारा मौत का, जूँ दरया का छोर।
आगे तपते नरक में, हा-हा कार का शोर।।

बुछ समझें सब, और कुछ फिरते बे परवह।
करम जो दुनिया में किये, बनते वही गवाह।।

नदी किनारे बैठ कर, बगुला खेल करे।
खेल रहे उस हंस पर, एक दम बाज़ बड़े।।

बाज़ पड़े उस रब के, जो सब कुछ छूट गया।
जो न था मन्चित ध्यान में, रब ने वह काम किय।।

दश्त में बसे परिंद जो, उन पर मैं कुरबान।
थल में रहें, कंकर चुगें, रब का न छोड़ें ध्यान।।

पानी उन से ही चलें, भारी दीहा के श्वास।
बन्दा जग में आये है, लेके सुहानी आस।।

आये मलकुल मौत जब, तोड़ के सारे द्वार।
भाई बन्धू बांध कर, करें उसे तैय्यार।

चला है बन्दा चार के कांधों पर सवार।
करम जो इस जग में किये, काम आयें उस पार।।

ज़िन्दा मूये समान तू, जगा न आखिर शब।
तू भूला रब को मगर, भूला तुझे न रब।।

सुबह का जागना फूल है, फल है आखिर शब।
जो जागें हासिल करें, बख्शिश देवें रब।।

सब्र की मन में कमान हो, सब्र की ही हो डोर।
सब्र का ही जब तीर हो, खलिक़ तेरी ओर।।

दुर्वेशी मुश्किल बड़ी, सतही तेरी प्रीत।
हैं कितने, जिन से चली, दुर्वेशी की रीत।।

सब्र को ही रख मुद्दआ, पक्का और मक़बूल।
सब्र बढ़े दरया तू, घटे तो बने कूल।।

पंक्षी तन्हा ताल में, और सैय्याद पचास।
तन लहरों में फंस गया, सांई तेरी आस।।

जिस्म तपे तंदूर सा, हाड़ बने ईंधन।
पांव थकें, चलूँ सर के बल जो हो पिया मिलन।।

सब में वही मालिक बसा, फीके बोल न बोल।
दिल न किसी का तोड़ तू, सब मोती अनमोल।।

दिल शिकनी जायेज़ नहीं, दिल मांक सब का।
पिया मिलन की जो चाह है, कोई दिल न दुखा।।

ملنے کا پتہ:

مکتبہ محمودیہ

جامعہ محمودیہ علی پور ہاپوڑ روڈ میرٹھ (یوپی) ۲۶۵۲۰۶

शब्द

दिल से मुहब्बत जो करें, वही आशिक़ सच्चे।
ज़ाहिर व बातिन बुख्तलिफ, कहलावें वह कच्चे।।

रंगे खुदा के इश्क में, मिले उन्हें दीदार।
भूले उस का नाम जो, बने ज़मीन पर बार।।

खींचे रब जिन्हें अपनी ओर, वही हैं दुर्वेश।
धन्य हैं माऐं, धन्य है उनका जग प्रवेश।।

तू तो है परवरदिगार, अगम अपार अनन्त।
चूमों उन के पांव जो, ये सच जानें संत।।

तेरी पनाह में हूँ खुदा, बख्शियो मेरी ज़ात।
शेख फरीद को बन्दगी की दीजियो खैरात।।

शब्द

बोले शेख फरीद जी, रब से जोड़ ध्यान।
ये तन कब्र में जाके तो होगा खाक समान।।

वस्ल की शेख फरीद जी, आई आज की शाम।
मन को लुभाते नफ्स की, बस में रहं लगाम।।

मरजाने के बाद जब, कोई न वापस आये।
झूठी दुनिया संग जड़ क्यों न धोखा खाये।।

कभी न बालो झूठ तुम, सच की न छोड़ो टेक।
गुरू बताये राह जो, राह वही है नेक।।

पार करें बलवान जब, निरबल पावें बल।
धन दौलत के लालची, दुख पावें हर पल।।

जग में हमेशा के लिये, रुका न कोई रुके।
जिस आसन बैठे हैं हम, कितने बैठ चुके।।

सावन बिजली, चैत आग, कातक मिलें कुलंग।
सरदी में अच्छा लगे, पीहा हो जब उनके संग।।

जोने वाले चल पड़े, रेमन! सोच संभल।
बनने में छः माह लगें, टूटे एक ही पल।।

फलक को ज़मीं से पुछिये, कितने गये सरदार।
तन कबरों में सड़ रहे, जान पे गिले हज़ार।।

मिलने का पताः-

मकतबा महमूदिया
निकट जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ
यू0 पी0 – 245206 (भारत)

शब्द

हाथ मलूँ दुख दरया डूबूँ।
हुई बावरी सांई ढूंढूँ।।

सांई! तेरे मन में रोश।
मैं दोशी नहीं तेरा दोश।।

तू मालिक तेरी कद्र न जानी।
जोबन खोया तब पहचानी।।

कैसी हुई तो कोयल काली।
पिया बिन हुई मैं जल-जल काली।।

पिया बिना कैसे सुख पाये।
कृपा करे प्रभू आप मिलाये।।

कुंवाँ भयन्कर और मैं अकेली।
कोई न साथी कोई न बेली।।

प्रभू कृपा सत संगत लेली।
मिला मुझे मेरा 'अल्लाह' बेली।।

राह दुख भरी और तारीक।
तेग की धार से भी बारीक।।

उस पर चलना बहुत मुहाल।
शेख फरीदा! पंथ संभाल।।

सूरह फातिहा का तर्जुमा अर्थ

शुररू 'अलाह' के नाम से जो सब पर महरबान है। बहुत महरबान है।

(1) तमाम तारीफैं 'अल्लाह' की हैं। जो तमाम जहानों का परवरदिगार है। (2) जो सब पर महरबान, बहुत महरबान है। (3) जो रोज़-ए-जज़ा का मालिक है। (4) (ऐ 'अल्लाह'!) हम तेरी ही इबादत करते हैं। और तुझी से मदद मांगते हैं। (5) हमें सीधे रास्ते की हिदायत अत फरमा। (6) उन लोगों के रास्ते की जिन पर तूने इनआम किया। (7) न कि उन लोगों के रास्ते की जिन पर गज़ब नाज़िल हुआ है, और न उनके रास्ते की जो भटके हुए हैं।

मकतबा महमूदिया से प्रकाशित होने वाली कुछ खास किताबें

1. खुतबात-ए-महूद (3 भागों में)
2. हयात महमूद (जीवन परिचय) (2 भागों में)
3. हुकूक-ए-मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)
4. मलफ़ूज़ात फक़ीहुल उम्मत (3 भागों में)
5. ज़िक्रे महमूद (मुख्तसर जीवन परिचय)
7. अरमगाने अहले दिल (कलामे महमूद)
8. मकतूबात फक़ीहुल उम्मत (3 भागों में)
9. गैर मुक़ल्लिदीन का असली चहरा
10. तज़किरा मुजद्दिद अलफे सानी (रहमतुल्लाहि अलैहि)
11. तज़किरा शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी (रह0)
12. तरबीयतुत तालिबीन
13. महमूदुल आमाल
14. हक़ीक़त-ए-हज
15. काम की बातैं
16. सलूक व एहसान
17. हयाते अबरार
18. तज़किरा रफीकुल उम्मत
19. खुतबाते रफीकुल उम्मत
10. जनाब गुरू नानक जी (रह0)और इस्लाम (उर्दू, हिंदी)

मिलने का पता:-

मकतबा महमूदिया

निकट जामिया महमूदिया, अलीपुर, हापुड़ रोड, मेरठ

यू0 पी0 - 245206 (भारत)